Paytm no is 9919750880

If you want to purchase digital comics of this blog
kindly contact on 9919750880
118 GB comics data Rs 8000

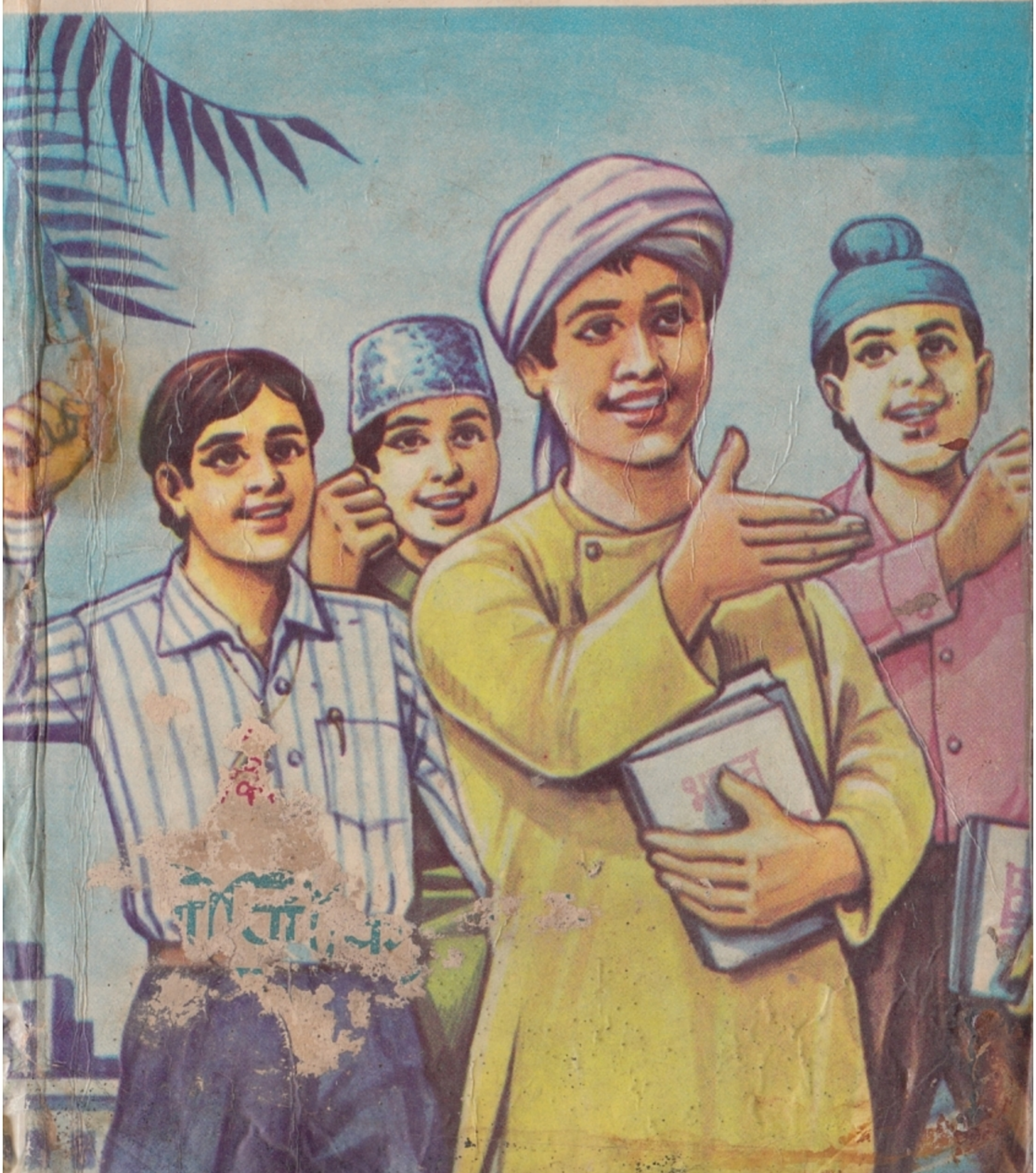


MANOJ KUMAR PANDEY
https://manojcomicsworld.blogspot.com/
https://manojcomicspagalpan.blogspot.com/
http://manojcomis.blogspot.com/

मनोज
बाल पाकेट बुक्स

हम सब एक हैं

मनोज



हम सब एक हैं

"उपस्थित सज्जनो, हिन्दुस्तान तुम्हारा है। तुम्हें यह मिलना चाहिए। कोई दूसरा यहां हुकूमत करे, क्या यह अच्छा है?"

"नहीं।" सभी ने एकसाथ सरगोशी की।

इससे आगे कि वह कुछ बोले, एक गोली सनसनाती आई और कांच का वह केबिन, जिसमें जॉन बैठा था, टूट गया।

"कौन बदतमीज है?"

आगे बोलने की जरूरत ही नहीं पड़ी। सारा हॉल पुलिस से घिर चुका था।

जॉन का चेहरा पीला पड़ गया। इसकी तो उसने कल्पना भी नहीं की थी।

"हैण्ड्स अप! सभी घिर चुके हो।"

सभी ने हाथ ऊपर कर लिए।

कोई कुछ समझ पाता, जॉन ने पैर से एक स्विच दबा दिया। सभी को एक झटका लगा। फर्श नीचे समा गया।

अब वे सभी कांच के कैदखाने में कैद थे। जॉन ने अट्टहास लगाया।

"अब तुम सबकी कब्र यहां बनेगी।"

मनोज बाल पॉकेट बुक्स

के

इसी सैट की रोचक रचनाएं

कब्रिस्तान का रहस्य	मनोज
खौफनाक आदमी	"
काले पहाड़ का राक्षस	"
काली ताकत	"
अनोखे लुटेरे	"
लुटेरों का अंत	"
सींगों वाला राक्षस	"
हम सब एक हैं	"
बदला और कानून	"

(पूरे सैट का मूल्य : सत्ताईस रुपये)

मनोज पॉकेट बुक्स

१५८४, दरीबा कलां, दिल्ली-६

हम सब एक हैं

(रोचक बाल उपन्यास)

मनोज

मनोज पॉकेट बुक्स
१५८४; दरीबा कलां; दिल्ली-६

प्रकाशक	मनोज पॉकिट बुक्स १५८४, दरीबा कलां, दिल्ली-११०००६ दूरभाष : २६७२३८
वितरक	राजा सेल्स कॉरपोरेशन २५/१२८-२९, शक्तिनगर, दिल्ली-११०००७ दूरभाष : ७११२३८४, ७१२३२०१
मुद्रक	विकास प्रिंटर्स १/७, गीता कॉलोनी, दिल्ली-११००३१

हम सब एक हैं : उपन्यास : मनोज

मूल्य : तीन रुपये

(इस उपन्यास के पात्र, स्थान व घटनाएं सर्वथा काल्पनिक हैं।)

हम सब एक हैं

धड़ाम्...! धड़ाम्...!! बम की गगनभेदी आवाज से चारों तरफ हाहाकार मच गया। सभी अपने-अपने घरों से निकलकर बाहर चौक की ओर भाग रहे थे।

बाहर निकलते ही लोगों पर गोलियों की एक बौछार आई। भयानक चीखों के साथ कई लोग वहीं मौत के मुंह में समा गए। शेष लोग अपने घरों की ओर भागे। दरवाजे फिर से बंद हो गए।

'हर-हर महादेव' की एक बार जोरदार आवाज हुई, इसके साथ ही हमलावरों पर गोलियों की बाढ़-सी आ गई। हमलावरों को इस हमले की आशा नहीं थी। वे हड़बड़ा गए। फिर क्या था ? वे सभी उन पर हॉवी हो गए। कुछ ही देर में वहां लाशें-ही-लाशें दिखाई दे रही थीं।

चारों तरफ खून-ही-खून...। इन्सानियत का खून !

कुछ ही देर में वहां मौत-सा सन्नाटा छा गया। फिर धीरे-धीरे दरवाजे खुलने लगे। इसके साथ ही लोग अपने-अपने संबंधियों को खोजने लगे।

सभी परिवारों में शोक छा गया। किसी से कुछ भी कहते नहीं बन रहा था।

▭ ▭

▭ ▭

बिलासपुर में कर्फ्यू लगा दिया गया। पुलिस चारों ओर गश्त लगा रही थी। अखबारवाले बार-बार पुलिस की

निंदा कर रहे थे। उसी दिन मोटे-मोटे अक्षरों में बस एक ही समाचार था—'कल रात के हुए हिन्दू-मुसलमान दंगे में दो सौ व्यक्ति बुरी तरह से घायल। पचपन की घटनास्थल पर मृत्यु। पुलिस के नियंत्रण से स्थिति बाहर।'

▭ ▭

▭ ▭

इंस्पेक्टर सतीश बिलासपुर में हुए दंगे से अत्यंत चिन्तित थे। पुलिस की आपातकालीन बैठक बुलाई गई। इसमें नीरज, मुकेश, सुमन, आंटी सभी उपस्थित थे। सभी के चेहरे गम्भीर थे।

"मेरी समझ में नहीं आ रहा है, यह सब क्या हो रहा है?" इंस्पेक्टर सतीश ने बिना किसी भूमिका के बात शुरू की।

"घटनाएं दिनोंदिन जोर पकड़ती जा रही हैं। पुलिस जब पहुंचती है तो वहां सिवाय लाशोंके कुछ नहीं मिलता।"

सभी के चेहरे सोचों में डूबे हुए थे।

"मैंने काफी सोच-समझकर यह निर्णय लिया है कि अब यह मामला इतना साधारण नहीं रहा। मैंने यह मामला केन्द्रीय गुप्तचर संस्था को सौंप दिया है। फिर भी यह मत समझना कि हमारा कर्तव्य समाप्त हो गया, वरन् अब और जिम्मेदारी से अपने कर्तव्य पर डटे रहना है।"

"सर!" सार्जेण्ट शुक्ला बोले।

"यस।"

"राम चौक में कल दो-तीन गुण्डों को घूमते हुए देखा गया। वे स्थानीय नहीं लग रहे थे। जब उन्हें गिरफ्तार करने की कोशिश की गई तो वे एक पुलिसमैन को घायल करके भागने में सफल हो गए।"

□ □

□ □

मस्जिद में सभी नमाज पढ़ रहे थे। आज शुक्रवार था तथा और दिनों की अपेक्षा आज काफी भीड़ थी। उसी समय कुछ अज्ञात लोगों ने वहां मांस का टुकड़ा फेंक दिया—फिर वही मारकाट।

□ □

□ □

नीरज व मुकेश दोनों ही शहर के चक्कर लगा रहे थे। उनकी पकड़ में कोई भी सूत्र नहीं आ रहा था।

"क्या ही अच्छा हो कि हम मस्जिद की निगरानी करें।"

"ठीक है।"

दोनों मस्जिद की निगरानी करने लगे। अंदर की क्या स्थिति है, यह उन्हें मालूम नहीं था—उन्होंने अपना पहनावा बदल लिया और मस्जिद के अंदर प्रवेश कर गए।

मस्जिद काफी बड़ी थी। उनकी निगाहें ऐसे स्थानों को खोज रही थीं, जिन्हें गुप्त दरवाजा या तहखाना कहा जाता।

उनके हाथ कुछ नहीं लगा। फिर भी उन्हें कुछ शक्लें संदिग्ध दिखाई दीं। फिर वे अगले दिन का प्रोग्राम बनाकर वापस हो लिए।

□ □

□ □

चिप्-चिप्…! जॉन के हाथ में लगी ट्रांसमीटर युक्त अंगूठी आवाज करने लगी।

उसने उसमें से एक पिन-सी बाहर निकाली। इसके

साथ ही उसमें एक माईक नजर आने लगा।

"जॉन स्पीपिंग दिस साइड।"

"सर ! मैं रहमान बोल रहा हूं।"

"हां बोलो, कुछ काम बना ?"

"थोड़ा-सा।"

"क्या मतलब ?"

"सर बात यह है कि मौलवी साहब पहले तो तैयार नहीं हुआ—मस्जिद के नीचे गुप्त अड्डा बनवाने देने के लिए—फिर उसे नोटों की झलक, सुरा और शराब की झलक दिखाई दी तो वह सोचने लगा है।"

"तुम किसी भी तरह मौलवी से सौदा पटाओ, चाहे दस-बीस हजार और लग जाएं।"

"ठीक है सर !"

"ओ० के०।"

"सर !"

"क्या बात है ?"

"सर, कुछ खर्चे वगैरह के लिए···।"

"ओह, डोंट वरी। कल पहुंच जाएगा।"

"ओ० के०। ओवर एण्ड ऑल।"

संबंध-विच्छेद हो गया। जॉन अपने कमरे में आ गया। उस कमरे में चारों ओर डैश बोर्ड-ही-डैश बोर्ड थे।

फिर वह एक ट्रांसमीटर पर झुक गया तथा फिर ट्रांसमीटर पर वेव्ज सैट करने लगा। वेव्ज सैट हो गईं तो बोला—"जॉन स्पीकिंग दिस साइड।"

"रामसिंह स्पीकिंग दिस साइड।"

"कुछ काम हुआ ?"

"यस सर !"

"ओह ! फिर भी अपने को हर समय तैयार रखो।"

"ओ० के० सर !"

फिर इस बात पर आधा घंटे तक विचार-विमर्श होता रहा। अन्त में यही निर्णय लिया गया कि सभी दंगाग्रस्त इलाकों में पुलिस की गश्त बढ़ा दी जाए।

▭ ▭

▭ ▭

दो दिन तक पूरी शान्ति छाई रही। कहीं भी कोई घटना नहीं घटी। तीसरे दिन कर्फ्यू हटा लिया गया। सभी इलाकों पर पुलिस तैनात थी। दिन-भर शांति से गुजरा।

रात्रि का दूसरा पहर अपनी समाप्ति पर था। सभी अपने-अपने घरों में आराम की नींद ले रहे थे।

शान्ति मोहल्ला अपने-आप में एक मिसाल था। उस मोहल्ले में मन्दिर भी था तो मस्जिद व गिरजाघर भी थे। किसी भी उत्सव में सभी लोग एक साथ शामिल होते थे। हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई कोई न था, सभी भाई थे।

आज वही मोहल्ला सांप्रदायिकता की आग में आ गया। इसी के परिणामस्वरूप रात्रि के दूसरे पहर की समाप्ति होने तक वहां दंगा शुरू हो गया। चारों ओर आग-ही-आग।

वहीं खड़ा रहमान मियां अल्लाह से दुआ कर रहा था —"या खुदा ! यह तूने क्या किया ? अच्छे-भले घर में आग लगवा दी। आज रफीक ने किशन महाराज के चाकू मार दिया, क्योंकि वह हिन्दू था। शायद वह भूल गया कि जब उसकी पत्नी बीमार पड़ी थी, तब किशन महाराज ने उसकी कितनी मदद की थी—वह देवता समान थे। यह जाति-पांति—हिन्दू-मुसलमान—उफ् अल्लाह ! क्या हो रहा है यह ?"

"गुड—रिपोर्ट !"

"मैं कल मन्दिर के पुजारी से मिला था। वह अपना काम करने को तैयार है। चाहे मन्दिर के भवन के नीचे तहखाने में आप अड्डा बनवाएं या···।"

"ओ० के०—ऑलराइट—ओवर एण्ड ऑल।"

संबंध-विच्छेद होते ही वह फिर वेव्ज सैट करने लगा।

"कौन—कालिया ?"

"यस, बॉस !"

"हां, तो आज रात में सारे पेम्फलेट सारे शहर में चिपकवा दो।"

"ओ० के० सर !"

"अपने ग्रुप में जितने भी अधिक आदमी शामिल कर सको—करो। सभी गुण्डों को इकट्ठा कर लो—पैसा पानी की तरह बहाओ, परन्तु काम में रुकावट नहीं आनी चाहिए।"

"ऐसा ही होगा सर !"

"ओ० के०—ओवर एण्ड ऑल।" संबंध-विच्छेद हो गया।

इसके पश्चात जॉन आकर अपनी कुर्सी पर बैठ गया और अपनी सफलताओं पर सोचने लगा। अभी तक कोई खास दंगा-फसाद नहीं हुआ। जॉन ने फिर अपने मिशन व अड्डे के बारे में सोचा। मिशन था हिन्दुस्तान में सांप्रदायिक दंगे करवाना, जिससे यहां की स्थिति अनियंत्रित हो जाए। सरकार का ध्यान इस ओर रहे और वे अपना तस्करी और अन्य कई गैरकानूनी काम करते रहें। उसने अपना अड्डा भी ऐसी जगह बनाया, जहां तक पहुंचना पुलिस

के लिए असम्भव था। ऐसा वह सोचता था।

▭ ▭

▭ ▭

आज नीरज व मुकेश दोनों अलग-अलग मोहल्लों में गए। पूरा दिन घूमते रहे। शाम का धुंधलका फैलना शुरू हो रहा था। नीरज वापस घर की ओर लौट रहा था कि अचानक वातावरण घोड़ों की टापों की आवाजों से गूंज उठा।

नीरज वहीं रुक गया। नीरज का हाथ एकदम अपने रिवॉल्वर की ओर चला गया। इसके साथ ही उसने ट्रांसमीटर पर सतीश अंकल से संबंध मिलाया।

"सतीश अंकल !"

"यस !"

"मैं नीरज बोल रहा हूं। विजय चौक में कुछ गड़बड़ी-सी होने वाली है। शीघ्र ही व्यवस्था करो।"

"ओ० के०।"

संबंध-विच्छेद हो गया।

अब वह काफी सतर्क हो गया।

सामने से बीस-पच्चीस घुड़सवार आते हुए दिखाई दिए। सभी के हाथों में राइफलें थीं। उनके आते ही मोहल्ले में भगदड़ मच गई। वह मोहल्ला हिन्दुओं का था। कुछ मुसलमान भी रहते थे। किंतु कभी भी उनमें यह भाव नहीं आया था कि वह हिन्दू हैं, हम मुसलमान हैं।

वहां पर भी कुछ व्यक्तियों ने सांप्रदायिकता का जहर फैलाना शुरू कर दिया। फिर वही हाल हुआ। आपसी झगड़ा।

घुड़सवारों ने अपने चेहरे पर नकाबें लगा रखी थीं।

उन्होंने आते ही दो बम फेंके। बम एक भयानक आवाज के साथ फट गए। कई चीखों से वातावरण गूंज उठा।

इतने में नीरजने भी एक फायर किया। अचूक निशाना, एक घुड़सवार गिर पड़ा।

इससे पहले कि वह घुड़सवार कुछ करते, चारों ओर से पुलिस ने उनको घेर लिया। शायद उनको इसकी आशा नहीं थी। वे हड़बड़ा गए।

"फायर! घेरा तोड़कर भागो।" एक नकाबपोश चीखा।

इसके साथ ही फायरों की आवाज तेज हो गई। पुलिस सुरक्षित थी।

घुड़सवार अपनी जान बचाकर भाग निकलने की फिराक में थे।

अचानक सतीश अंकल को एक विचार आया। उन्होंने पुलिसमैनों को एक विशेष संकेत किया। सभी समझ गए।

धीरे-धीरे पुलिसमैनों की टोली कमजोर होने लगी। सभी घुड़सवार भागने में सफल हो रहे थे। वह अन्तिम घुड़सवार था। वह जैसे ही गली से निकलने को हुआ कि एक फंदा उसके गले में पड़ा।

"हाय! मार डाला।" इसके साथ ही उसका घोड़ा आगे निकल गया। वह वहीं गिर पड़ा।

इससे पहले कि वह कुछ समझ पाता, नीरज ने बिना एक मिनट की भी देरी किए उसके हाथ-पैर बांध दिए।

इतने में पुलिस वैन उधर से गुजरी—नीरज ने विशेष संकेत से वैन को रुकवाया। वैन में उसे डाला और वैन पुलिस स्टेशन की ओर बढ़ गई।

घुड़सवार तेजी से शहर के बाहरी हिस्से की ओर बढ़ रहे थे। वह बहुत ज्यादा हड़बड़ाए हुए थे, इसलिए उन्हें यह सोचने का समय नहीं मिला कि कोई उनका पीछा कर सकता है।

इंस्पेक्टर सतीश अपने साथियों सहित उसका पीछा कर रहे थे। इंस्पेक्टर सतीश अपने हैडक्वार्टर को भी बराबर रिपोर्ट दे रहे थे।

जो घुड़सवार आगे-आगे चल रहा था, अचानक उसकी अंगूठी में कुछ आवाज होने लगी। उसने उसकी पिन निकाली।

"यस—फोर्टीन नम्बर सर !"

"तुम असफल होकर लौट रहे हो।" एक सर्द आवाज ने नम्बर फोर्टीन के पूरे शरीर में सनसनी भर दी।

"जी। ऐसा पता नहीं क्यों हुआ सर !" वह घिघियाता-सा बोला।

"आजकल तुम निकम्मे होते जा रहे हो।"

एक क्षण का मौन रहा। फिर वही आवाज पुनः उभरी।

"तुम्हें यह भी पता तक न होगा कि तुम असफल होकर मौत को भी साथ लेकर अड्डे की ओर बढ़ रहे हो।"

"क्या मतलब ?" एकाएक फोर्टीन नम्बर ऐसे चौंका, मानो उसे किसी बिच्छू ने अचानक डंक मारा हो। फिर पूछा—"मैं समझा नहीं सर !"

"तुम समझोगे भी नहीं—तुम्हारा पीछा किया जा रहा है।"

उसने एक नजर अपने पीछे देखा। अंधेरे के कारण कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। वह आंखें फाड़-फाड़कर देखने लगा।

उसे फिर वही आवाज सुनाई पड़ी—"तुम्हारा पीछा जीप द्वारा किया जा रहा है और उस जीप में साक्षात् मौत होगी।"

"अब क्या किया जाए ?" वह बुदबुदा उठा। वास्तव में वह नर्वस हो गया था।

"तुम एक काम करो—घोड़ों को तेज दौड़ाओ—फिर घोड़ों को वहीं छोड़ दो—सब अपने-अपने घर चले जाओ।"

"ओ० के० सर !"

फिर उसने अपनी योजना सभी को बताई। सभी ने घोड़ों को ऐड़ लगाई। घोड़े सरपट भागे।

इंस्पेक्टर सतीश बराबर उनका पीछा करते रहे। उन्हें पीछा करने में इसलिए कठिनाई नहीं हुई कि वह सभी रास्ते उनके जाने-पहचाने थे।

घोड़ों की रफ्तार तेज होने से उन्होंने यह अंदाजा लगाया कि वे भाग रहे हैं। उन्होंने जीप की गति में तेजी दी।

फिर घोड़ों की रफ्तार कम होने लगी।

जॉन ने फिर फोर्टीन नम्बर से संबंध मिलाया।

"यस सर !"

"तुम्हारा एक साथी पुलिस की गिरफ्त में आ गया है। वह कहां है ? अभी पता करो—उसकी जबान खुलने से पहले ही···।"

"ओ० के० सर !"

"क्या पोजीशन है ?"

"सब ठीक है।"

"ओ० के०। ओवर एण्ड ऑल।"

फिर सभी घोड़ों से कूद गए। कूदने के साथ ही सभी जल्दी-से-जल्दी अपने-अपने गंतव्य की ओर दौड़ पड़े।

▭ ▭

▭ ▭

इंस्पेक्टर सतीश घोड़ों का पीछा बराबर कर रहे थे। उन्होंने जीप की हैडलाइट्स व अन्य सभी लाइटें बंद कर रखी थीं, ताकि दुश्मन उन पर शक न कर सके।

एकाएक ही वे चौंक गए—घोड़ों की रफ्तार तेज हुई; फिर धीमी—अब उनकी चाल अनियमित हो गई।

रास्ता वहां सीधा ही था। फिर काफी सोच-समझकर उन्होंने सभी को पोजीशन लेने को कहा। इसके बाद उन्होंने लाइट ऑन की। कुछ दिखाई नहीं दिया—केवल घोड़ों की टापों की आवाज आ रही थी।

उन्होंने गाड़ी को रफ्तार दी। अगले ही पल उन्हें घोड़े दिखाई दिए।

यह क्या? घोड़े वैसे ही भाग रहे थे। उन पर कोई सवार नहीं था।

इंस्पेक्टर सतीश का दिमाग घूम गया। वह कभी घोड़ों को देखते, कभी पुलिसमैनों को।

एकाएक उन्हें होश आया।

"लाइट ऑन करो और शीघ्रता से उन्हें खोजो। यहीं कहीं आसपास होंगे।"

सभी पुलिसमैनों के हाथों में टॉर्चें चमक उठीं।

घोड़े इधर-उधर भाग रहे थे।

उनके हाथ कोई भी सूत्र नहीं लगा था। फिर भी

प्रयत्न जारी था।

▭ ▭

▭ ▭

नीरज ने उस नकाबपोश को उठाकर पुलिस टॉर्चर-रूम में डाल दिया। उसे एक कुर्सी पर बिठाया। उसके हाथ-पैर कुर्सी से बांध दिए।

सबसे पहले उसने उसकी नकाब खींची। नकाब खिंचते ही वह चौंक पड़ा।

वह वहां का प्रसिद्ध गुण्डा श्यामसिंह था।

"ओह !"

फिर उसने उसके मुंह पर पानी के छींटे डालने शुरू किए।

धीरे-धीरे वह होश में आने लगा। फिर धीरे से उसने आंखें खोलीं।

"मैं कहां हूं ?"

"अपने अब्बा के सामने।" नीरज ने सर्द आवाज में कहा।

श्यामसिंह ने उस आवाज के साथ ही नीरज की ओर देखा।

"श्यामसिंह ! जिस किसी की भी आंखें भारत माता की ओर उठेंगी, वे आंखें फोड़ दी जाएंगी। जो हाथ उठेंगे, वे हाथ तोड़ दिए जायेंगे…।"

श्यामसिंह की आंखें आश्चर्य से फैल गईं। वह उसका नाम भी जानता है। फिर उसकी आवाज सुनकर एक बार तो वह सिहर उठा।

"श्यामसिंह, मैं जो पूछता हूं, उसका सही-सही जवाब दो। इसी में तुम्हारी भलाई है।"

"मैं कुछ नहीं जा···।"

श्यामसिंह का वाक्य अभी पूरा भी नहीं हुआ कि नीरज ने एक वजनदार घूंसा श्यामसिंह के मुंह पर मारा।

श्यामसिंह बिलबिला उठा।

"स्विच ऑन।"

नीरज का चेहरा क्रोध के मारे लाल हो गया। अब वह साक्षात् यमदूत लग रहा था। उसके चेहरे पर दरिंदगी छाई हुई थी।

श्यामसिंह के मुंह से खून निकलने लगा। स्विच ऑन करते ही कुर्सी गर्म होने लगी।

श्यामसिंह के लिए यह प्रथम अवसर था। वह टूटने लगा।

नीरज ने उसके कुछ जले भाग पर मिर्चें लगा दीं।

"मैं बताता हूं—।" वह चीत्कार कर उठा।

स्विच ऑफ कर दिया गया।

"मैं पंद्रह-बीस दिनों पहले होटल नीरू में बैठा था। मैं प्रायः वहां जाता रहता हूं। उस दिन एक लड़की मेरे पास आकर बैठ गई। मैंने कोई माइण्ड नहीं किया। जैसा वह होटल था उसमें यह सब आम बात हैं।"

वह बैठते ही बोली—'एक्सक्यूज मी!'

'यस!'

'क्या मैं यहां बैठ सकती हूं?'

'श्योर-श्योर!'

'क्या आपके पास माचिस है?'

'जी नहीं।'

" वह उठकर चली गई।

" मैं काफी देर तक वहां बैठा रहा। रात्रि के ग्यारह

बजे तक मैं वहीं रहा। खाना वगैरह खाने के बाद मैं अपने घर की ओर रवाना हुआ।

"अभी मैं होटल से निकलकर थोड़ा-सा आगे बढ़ा ही था कि किसी ने मेरे सिर पर पीछे से वार किया, वार काफी वजनदार था। मैं वहीं बेहोश हो गया।

" जब आंख खुली तो मैंने देखा कि मैं एक हॉल में हूं, जिसमें चारों ओर अंधेरा-ही-अंधेरा था। केवल एक बहुत छोटा बल्ब जल रहा था, जिससे वह हॉल दिखाई देता था।"

"तुम उस हॉल में अकेले थे ?"

"हां।"

"फिर ?"

"मैं कुछ देर तक वहीं पड़ा रहा। थोड़ी ही देर बाद वहां हल्की-हल्की रोशनी फैलने लगी। मैंने देखा, सामने एक मंच था। उस मंच पर एक कुर्सी पड़ी हुई थी और एक आदमी जो उस पर बैठा था, बोला—'श्यामसिंह, तुम तो बड़े कमजोर निकले। हमने तो तुम्हें बड़ा ही दिलेर समझा था।'

" मैं सकपका गया।

'खैर ! अब तुम हमारे लिए काम करोगे।'

'जी ! मैं समझा नहीं !'

'सब समझ जाओगे। ऐसी भी क्या जल्दी है ? आज से तुम वही काम करोगे, जो हम कहेंगे व चाहेंगे। इसके लिए तुम्हें उचित पैसा मिलेगा। सब सुख-सुविधाएं मिलेंगी।'

'नहीं। मैं किसी का कोई भी काम नहीं करूंगा।'

'क्याऽऽऽ ?' वह आगबबूला हो गया, फिर एकाएक शांत हो गया।

'तुम करोगे, क्योंकि···।' उसने अपना वाक्य अधूरा

ही छोड़ दिया और एक तरफ इशारा किया। मैंने घूमकर देखा—वहां मेरी बहन जंजीरों में बंधी थी।

मैं समझ गया, इसके हाथ बहुत लम्बे हैं। मैं मजबूर था।" श्यामसिंह रो पड़ा।

"ओह!" मानो नीरज की समझ में सारी बात आ गई हो।

"उसके बाद क्या हुआ?"

"मुझे आदेश दिया गया कि तुम लोगों में सांप्रदायिक भाव फैलाओ। इसके लिए पेम्फलेट, कैसेट—जिनमें बड़े-बड़े मौलवियों, मठाधीशों की डुप्लीकेट आवाजों में भाषण टेप किए होते हैं—वे दी गईं। मैं और मेरे जैसे अन्य उन्हें मुफ्त में बांट रहे हैं।"

"तुम्हें यह मैसेज वगैरह कहां से मिलते हैं?"

"उसी होटल से—हम हमेशा शाम को उस होटल में जाते हैं। हमारा सबका अलग-अलग नम्बर है। वहां काउं-टर के पास जाकर नम्बर बोल देते हैं तो वह हमें हमारा मैसेज दे देता है।"

"वह तुमको पहचानता है क्या?"

"हां।"

"कैसे?"

"वहां हम अपनी असल शक्ल में जाते हैं।"

"अभी ये जो दंगे हो रहे हैं, उनमें से तुमने कितनों में भाग लिया?"

"प्राय: सभी दंगों में। असल में यह दंगे आपस में बाद में होते हैं, पहले हम इनको पूरी तरह से भड़का देते हैं, फिर थोड़ी मारकाट—उसके बाद भड़की हुई जनता अपने-आप···।"

नीरज की समझ में सारी बात आ गई।

"इसके अलावा इसमें कई प्रभावशाली व्यक्ति भी हैं।"

"ठीक है। तुम पुलिस के मददगार बने हो, इसलिए तुम्हें सभी तरह की सुविधाएं दी जाएंगी।"

"ठाक। लेकिन उनके हाथ लम्बे हैं। मुझे अपनी जिंदगी खतरे में लग रही है?"

"तुम बेफिक्र रहो।"

नीरज ने उसे आराम से बिठाया—खाना वगैरह खिलाया।

▭ ▭

▭ ▭

आई० जी० सैयद अपनी कुर्सी पर बैठे कुछ सोच रहे थे कि फोन की घण्टी घनघना उठी।

"आई० जी० सैयद स्पीकिंग दिस साइड।"

"मैं सुरजीतसिंह की सेक्रेटरी बोल रही हूं।"

"कहिए देवीजी, आपको क्या कष्ट है?"

"मुझे कष्ट? आप जैसी पुलिस हमको कष्ट के सिवाय दे भी क्या सकती है? आप अपने ऑफिस में आराम फरमा रहे हैं और यहां हमारे बॉस का अपहरण हो गया।"

"क्या?"

"हां, और ध्यान से सुनिए, अगर हमारे बॉस का पता न लगा तो हमसे बुरा कोई ना होगा।"

"ओह!"

संबंध-विच्छेद हो गया।

आई० जी० साहब का दिमाग भनभना-सा गया। सुरजीतसिंह शहर की मानी हुई हस्ती थी। सुरजीतसिंह

का अपहरण एक बड़ा काम था।

उन्होंने इंस्पेक्टर सतीश को बुलाया तथा उसको सारी बात बताई, क्योंकि वे जानते थे, इंस्पेक्टर सतीश बहुत ही योग्य पुलिस ऑफिसर है।

इंस्पेक्टर सतीश उसी समय सुरजीतसिंह की कोठी की ओर चल पड़ा।

कोठी तक पहुंचते-पहुंचते ज्यादा समय नहीं लगा। वहां सुरजीतसिंह की सेक्रेटरी मौजूद थी। उन्होंने खानापूर्ति की; फिर शीघ्र ही कार्यवाही करने का वचन देकर वहां से सीधा ऑफिस आ गए।

▭ ▭

▭ ▭

नीरज व मुकेश दोनों ने अपना पहनावा गुण्डों जैसा ही पहन लिया। फुल पैंट, उस पर छपी हुई हाफ बनियान, हाथ में स्टील का कड़ा, गले में रूमाल—कुल मिलाकर वे अपने को गुण्डा प्रदर्शित करने में सफल रहे, हालांकि उनकी उम्र कम थी, परन्तु स्वास्थ्य अच्छा होने के कारण वे बड़े लग रहे थे।

वे दोनों होटल नीरू में पहुंच गए। वहां पर काफी शोर-शराबा था। चारों ओर चरस व घटिया दर्जे की शराब की गंध थी।

उनको वहां रुकना बहुत मुश्किल लग रहा था, परन्तु मजबूरी थी। उनकी निगाहें चौकन्नी थीं। सभी के चेहरों पर एक जैसे ही भाव थे। नीरज बाहर की मेज पर बैठ गया।

कुछ देर वह वहां बैठा रहा। मुकेश की नजरें काउंटर पर थीं। अभी तक कोई व्यक्ति, जैसा कि श्यामसिंह ने

बताया था, वहां नहीं आया था। वह इंतजार करता रहा। कोई भी काम की बात मालूम नहीं हो सकी—फिर उसने सोचा, कहीं श्यामसिंह ने उससे···।

लेकिन उसे विश्वास नहीं आया। वह बाहर आ गया। दोनों की नजरें मिलीं।

"कहीं श्यामसिंह ने हमें गलत तो नहीं बता दिया?" उसने अपने मन में उठ रही शंका बता दी।

"नहीं। श्यामसिंह ने सही बताया होगा—हो सकता है; शत्रु सचेत हो गया हो या आज का प्रोग्राम स्थगित कर दिया हो?"

"हां, यह भी हो सकता है।"

इसके पश्चात् वे वहां पुन: आने का प्रोग्राम बनाकर चल दिए और रात-भर अलग-अलग बस्तियों में घूमते रहे। पुलिस की व्यवस्था काफी अच्छी थी।

वे एक बार फिर होटल नीरू भी गए। उन्हें मालूम था कि इसके नीचे एक गुप्त अड्डा है, परन्तु उसके बारे में अभी तक पता न लगा सके।

▭ ▭

▭ ▭

जॉन अपने विशेष-कक्ष में बैठा पुलिस की सतर्कता पर सोच रहा था। पुलिस ने अपने प्रबन्ध और कड़े कर दिए थे। उसका कल ही कुछ सोना आ रहा था। बन्दरगाह पर दूर-दूर तक सुरक्षा का काफी प्रबन्ध था।

चिप्-चिप्! उसके ट्रांसमीटर में हलचल हुई।

"यस, जॉन स्पीकिंग दिस साइड।"

"सर! अभी नम्बर जीरो से सूचना मिली है कि कल सोना आ रहा है। अपना इंतजाम कर लें। ओवर।"

"ठीक है।"

"कल सिगनल कितने बजे देना है?"

"रात को तीन सत्रह पर।"

"ओ० के० सर! ओवर एण्ड ऑल।"

संबंध-विच्छेद होने के बाद उसने पास रखे फोन को उठाया—दूसरी तरफ से आवाज आई—"यस सर!"

"नम्बर थर्टी वन!"

संबंध मिलाने की खड़खड़ाहट सुनाई दी, फिर संबंध मिल गया। जॉन कहने लगा—"थर्टी वन।"

"यस सर!" दूसरी तरफ से आदर-सूचक शब्दों में कहा गया।

"कल माल आ रहा है?"

"यस सर!"

"तुम्हारी ड्यूटी है, उसे सुरक्षित गोदाम तक पहुंचाना!"

"ठीक है, सर!"

"पुलिस की व्यवस्था बहुत सख्त है। इसके लिए तुम्हें कुछ भी करना पड़े।"

"हो जाएगा, सर!"

"आज रात को कहीं दंगा करवा दो।"

"यस सर!"

"अगर दंगा नहीं हो तो दो-चार बम वैसे ही फिंकवा दो।"

"ओ० के० सर।"

"पेम्फलेट वाला काम हो गया?"

उधर से घिघियाती आवाज आई—"नहीं सर!"

"क्या कहा?"

उधर मौन छाया रहा।

"नम्बर थर्टी वन ! मैंने तुम्हें यह काम सौंपा था, जबकि काम तो कालिया के आदमी ही कर रहे हैं ?"

"सर ! उन आदमियों ने काम ही नहीं किया।"

"क्यों ?"

"उनका कहना है कि शहर के हर कोने, हर जगह पर पुलिस है। अगर उनकी नजरों में आ गए तो···। पुलिस के आदमी चारों ओर घूम रहे हैं।"

"उनको प्रेस (दबाव) करो।"

"वे मानते ही नहीं—ज्यादा कहते हैं तो कहते हैं हमें अपनी जान ऐसे नहीं गंवानी, अपने पैसे वापस ले लो।"

"उनकी यह मजाल। जी चाहता है, सालों को गोली मार दूं।"

इतना कहते ही गुस्से में आकर उसने फोन क्रेडिल पर पटक दिया।

थर्टी वन बड़बड़ाता रहा, परन्तु उसकी बड़बड़ाहट वहां कोई सुनने वाला नहीं था।

जॉन का दिमाग परेशान हो गया। शुरू-शुरू में उसे लगा कि यह काम बहुत आसान है, परन्तु अब उसे मालूम हुआ कि यह काम कितना मुश्किल है।

उसने फोन उठाया।

"यस सर !" दूसरी तरफ से आवाज उभरी।

"नम्बर जीरो !"

जीरो से संबंध काफी समय बाद मिला।

"हैलो—हैलो ! कौन ?"

"जॉन स्पीकिंग।"

"कहिए सर !"

"ऐसा है, कल माल जो आ रहा है, वह रवाना हो चुका

है क्या ?"

"यस सर !"

"क्या वह दो-तीन दिन रुक नहीं सकता ?"

"नहीं सर !"

"फिर भी तुम उनसे संबंध मिलाओ, फिर रिपोर्ट दो।"

"ओ० के० सर।"

फोन का संबंध-विच्छेद हो गया।

▭ ▭

▭ ▭

केन्द्रीय गुप्तचर संस्था भी इस मामले पर गौर कर रही थी।

चीफ एवं उनके साथी सहयोगी इस समय आपातकालीन बैठक में भाग ले रहे थे।

"आज सांप्रदायिकता की यह आग बिलासपुर में फैली हुई है, कल कहीं और—इस प्रकार सारा देश इस आग में जलने लगा तो ?" अन्तिम स्वर में एक दुःख-भरा कम्पन था।

"क्यों ना विनोद को इस मिशन पर भेज दिया जाए ?" चीफ के सचिव ने कहा।

"नहीं सर ! अभी वह बहुत छोटा है। उसको भेजकर हम जान-बूझकर खतरा मोल नहीं ले सकते।" एक सीनियर आफिसर ने कहा, जो कि अभी इस विभाग में नया ही आया था।

"शायद तुमने पिछली फाइलें नहीं देखी हैं ?"

"आपका मतलब मैं समझा नहीं सर !" उस आफिसर ने सादर स्वर में कहा।

"तुम आज जरा एक साल पुरानी फाइलों का अध्ययन करना। उसके बाद तुम स्वयं समझ जाओगे कि हमारे सचिव ने कितना सही चुनाव किया है।"

"ओ० के० सर !"

"अब यह सभा कल तक के लिए स्थगित की जाती है। सभी इस मसले पर गौर से सोचें। हमें हमारा कदम बहुत सोच-समझकर उठाना है, ताकि दुश्मन सचेत न हो।"

सभी ने चीफ के आगे आदरपूर्वक सिर झुकाया। मीटिंग समाप्त हो गई।

▭ ▭

▭ ▭

उस सीनियर ऑफिसर ने विनोद की फाइल निकलवाई। वह उसे गौर से पढ़ने लगा। जैसे-जैसे वह फाइल पढ़ता गया, उसकी आंखें आश्चर्य से फैलती गईं।

"वाह ! क्या शानदार है !" उसके मुंह से अनायास ही निकल पड़ा। उम्र में छोटा है केवल, परन्तु…।

चीफ के सचिव का सुझाव सर्व-सम्मति से पास हो गया।

विनोद बिलासपुर आ गया।

▭ ▭

▭ ▭

वह बदनाम अड्डों पर बैठने लगा। वह जानता था कि जितने भी अवैध धंधे होते हैं, वे सभी यहां से शुरू होते हैं।

"यार पेम्फलेट चिपके नहीं ?" फुसफुसाता स्वर उसे सुनाई दिया।

"नहीं। पुलिस अभी काफी सख्त है।"

"बॉस गुस्सा हो रहा है।"

"और क्या करें ?"

"आज काम करवा दो।"

"असम्भव है।"

वे दोनों बातें करते हुए निकल गए। विनोद उनका पीछा कर रहा था। वे दोनों आगे से मोड़ मुड़ गए। सामने झोंपड़ियां बनी हुई थीं। वे दोनों झोंपड़ियों की ओर बढ़ गए।

विनोद भी उनके साथ झोंपड़ियों तक पहुंच गया।

जब वे झोंपड़ियों में प्रवेश कर गए तो विनोद की आंखें सोचने के अंदाज में सिकुड़ गईं।

वह एक पल रुका। फिर उसमें प्रवेश कर गया।

"कौन है ?"

"तुम्हारी ही तरह काम करने वाला। जग्गू उस्ताद ने भेजा है।"

"कौन जग्गू उस्ताद ?"

"अरे !" विनोद ने आश्चर्य से आंखें फैलाते हुए कहा।

दोनों भौंचक्के से विनोद को देखने लगे।

"तुम्हारी झोंपड़ी नम्बर चालीस है ?"

"हां।"

विनोद ने बताया—"लक्ष्मीपुर का रहने वाला हूं। वहां पर उस्ताद की सेवा करता रहा हूं। अभी मैंने दंगों में भी भाग लिया था। मेरे हाथों से एक पुलिस वाला मर गया। मैं पुलिस की नजरों में आ गया। उस्ताद ने फिर यहां भेज दिया है।"

दोनों ने लक्ष्मीपुर का नाम सुना था। पहले दो-चार बार गए भी थे। हो सकता है, कोई···। उन्हें ध्यान नहीं आया।

"तो तुम क्या काम कर सकते हो ?"

"जो तुम बोलोगे।"

"जान का खतरा है।"

"जग्गू उस्ताद के साथ रहकर यही बात सीखी है—बेटा इस लाइन में जान हथेली पर रखनी पड़ती है।"

दोनों ही विनोद से काफी प्रभावित नजर आ रहे थे। दोनों ने आंखों-ही-आंखों में इशारे किए।

"एक पेम्फलेट शहर में चिपकवाना है।"

"दंगे के वास्ते ?"

दोनों ही चौंक पड़े।

"क्या तुम्हें मालूम है ?"

"और नहीं तो क्या ? लक्ष्मीपुर में मैंने ही चिपकाये थे।"

दोनों के चेहरों पर खुशी के भाव छा गए।

विनोद ने पूछा—"क्या मिलेगा ?"

"इसकी चिन्ता मत करो।"

"तो ठीक है। पेम्फलेट दे दो। कुछ रुककर फिर पूछा—"तुम्हारे नाम क्या हैं ?"

"मेरा हरीश व इसका कुमार है।"

"तुम्हारा ?"

"शेरा।"

"वास्तव में तुम शेर हो।"

"अजी तुमने देखा ही क्या है ?"

हरीश ने बिस्तरे को एक साइड से खोला, उसमें तह किए हुए पेम्फलेट थे। वे दो तरह के थे। एक में हिन्दुओं को भड़काया गया था और दूसरी ओर मुसलमानों को। दोनों की छपाई के ढंग के इस तरह थे कि कोई भी विश्वास नहीं

कर सकता था कि यह एक ही आदमी का काम है।

"कहां-कहां लगवाने हैं ?"

"जहां-जहां जगह मिले।"

"ठीक है, काम हो जाएगा।"

"तुम कल होटल नीरू में मिलना।"

"यह कहां है ?"

हरीश ने उसको रास्ता बता दिया।

"ओ० के०।"

"ओ० के०।

वह सीधा वहां से पुलिस-स्टेशन एस० पी० के ऑफिस में पहुंच गया और वहां आराम से कुर्सी पर बैठ गया।

एस० पी० चौंका। एक गुण्डा उसके कमरे में घुस आया। एस० पी० का चेहरा तमतमा गया। उसने गुस्से में हवलदार को पुकारा—"हवलदार !"

"यस सर !"

"साहब को ठंडा-गर्म दो।"

हवलदार ने विनोद का कॉलर पकड़ लिया।

"यह क्या बदतमीजी है ?" विनोद बोला।

"यही तो हम कह रहे हैं। तुम्हें तमीज सिखाने ले जा रहे हैं।"

"भई मैंने क्या कुसूर किया है ?" विनोद घिघियाता हुआ बोला।

"चल-चल।"

"हवलदार तुम्हें कॉलर पकड़ना बहुत महंगा पड़ेगा।" विनोद ने अजीब लहजे में कहा।

हवलदार का चेहरा तमतमा गया। उसने आव देखा न ताव, डंडा हवा में घुमा दिया।

विनोद ने वार बचाया—अगले ही पल डंडा उसके हाथ में था।

"एस० पी० साहब, क्या शरीफ आदमियों के साथ यही सलूक किया जाता है ?"

"मैंने तुम्हारे जैसे बहुत शरीफ देखे हैं। जब तक तुम्हारे दो-चार डंडे नहीं पड़ेंगे, तब तक तुम सीधे नहीं होगे।" एस० पी० साहब ने बड़े घमंड-भरे स्वर में कहा।

उन्होंने तीन-चार पुलिसमैन को बुलाया। उन्हें आश्चर्य इस बात का था कि इतना छोटा लड़का, इतना फुर्तीला !

विनोद भी तैयार हो गया।

पुलिसमैनों को उसने खूब छकाया। बाद में उसने अपना परिचय-पत्र एस० पी० के सामने रख दिया।

एस० पी० महोदय की बोलती बंद। उन्होंने जल्दी से विनोद को सैल्यूट मारा। विनोद के चेहरे पर अर्थभरी मुस्कराहट थी।

"क्या किसी शरीफ व्यक्ति के साथ ऐसा ही सलूक किया जाता है ?"

एस० पी० क्या बोलता !

"मुझे आपसे ऐसी आशा नहीं थी।" फिर उसने दो-चार कड़ी बातें सुना दीं।

इसके बाद उसने एस० पी० को वह पेम्फलेट दिखाए। एस० पी० की आंखें फैल गईं।

"सुनिये ! मैं जैसे कह रहा हूं, वैसा ही करिए।" उसने वे पेम्फलेट एस० पी० को दे दिए।

"इन्हें शहर के विभिन्न भागों में चिपकवा दीजिए।" साथ में उसने दूसरे पेम्फलेट भी देते हुए कहा—"इन्हें लो।" पहले वाले पेम्फलेट थोड़े-से थे, दूसरे ज्यादा।

दूसरा पेम्फलेट हिन्दू-मुसलमान एकता का, अपनत्व व भाईचारे की अपील का था।

विनोद का प्लान था कि इस पेम्फलेट से उस पेम्फलेट का असर समाप्त हो जाएगा।

"यह काम आज रात में हो जाना चाहिए और किसी को मालूम भी नहीं पड़ना चाहिए—दोनों पेम्फलेट अलग-अलग आदमियों से लगवाना।"

"ओ० के०।"

"थैंक्यू।"

▭ ▭

▭ ▭

जॉन ने रामसिंह से मिलकर मन्दिर के नीचे तहखाने में गोदाम बना लिया। उसके अंदर उसने सुरंगें बनाई, जो सीधी उसके अड्डे से मिलती थी। वैसी ही सुरंग उसने मस्जिद तक बनवा ली। अपनी इस कामयाबी पर वह सोच रहा था कि फोन घनघना उठा।

"यस।"

"सर! थर्टी वन आपसे संबंध मिलाना चाह रहा है।"

"ओ० के०।"

संबंध मिलते ही थर्टी वन आदरपूर्वक स्वर में बोला, "सर! आज पेम्फलेट का काम हो जाएगा।"

"वह कैसे?"

"सर! हरीश के उस्ताद का एक आदमी आज बिलासपुर से आया है। वह कर देगा।"

"तुम उसे अच्छी तरह जानते हो?"

"यस सर।"

"कहीं वह पुलिस का आदमी…।"

"नहीं-नहीं, पुलिस तो उसकी जान की दुश्मन है। उसने एक पुलिस वाले का खून कर दिया है।"

"गुड ! हम उससे मिलना पसंद करेंगे।"

"ओ० के० सर !"

"थैंक्यू सर !"

संबंध-विच्छेद हो गया।

"तुम को हम अपने बॉस से मिलवायेंगे।"

विनोद ने लापरवाही से सिर हिला दिया।

▭ ▭

▭ ▭

विनोद ने शहर का चक्कर लगाया। सारे शहर में पेम्फलेट चिपके हुए थे।

परन्तु हिन्दू-मुसलमान एकता के पेम्फलेट ज्यादा थे।

विनोद के चेहरे पर अर्थभरी मुस्कराहट थी।

▭ ▭

▭ ▭

होटल नीरू में प्रायः जॉन के आदमी हर समय रहते थे।

होटल नीरू भी जॉन के आदमियों का प्रमुख अड्डा था।

जब से श्यामसिंह पकड़ा गया, तब से उन्होंने काउंटर से संदेश लेना बंद कर दिया था। उन्हें यह शक था कि कहीं श्यामसिंह ने उन्हें सारी बातें बता न दी हों ?

फिर भी उनमें से किसी को मालूम न था कि उनका बॉस कौन है। अड्डा तक मालूम न था।

▭ ▭

▭ ▭

अभी इन दिनों दंगा नहीं हुआ। फिर भी पुलिस सतर्क

थी। पूरी मुस्तैदी से पहरा दे रही थी। रात्रि के तीन बज रहे थे कि एकाएक कहीं से एक बम आकर गिरा।

धड़ाम्! पुलिसमैन यह समझ पाते कि यह कहां से आया कि दूसरी ओर से दूसरा आकर गिरा। इसी तरह की घटनाएं दो-तीन मोहल्लों में हुई।

कई पुलिसमैन घायल हुए।

सभी का ध्यान इसी ओर था, लेकिन इंस्पेक्टर प्रभु अपनी ड्यूटी पर तैनात था। उसकी ड्यूटी बिलासपुर के तट पर थी। तीन बजे उसे यंत्रों में खड़खड़ाहट सुनाई दी। उसने यंत्रों को देखा, सुई धीरे-धीरे सरक रही थी।

वह समझ गया, कोई जहाज आ रहा है। उसने दूरबीन लगाकर देखा। कुछ दिखाई नहीं दिया।

उसने हैडक्वार्टर को सुचना दी।

तीन सत्रह पर उधर से लाल बत्ती का सिगनल दिया गया।

उधर से हरी बत्ती का। मतलब लाइन क्लीयर।

थोड़ी ही देर में लांच किनारे पर लग गई।

"रात काली है।"

"फिर भी सुहावनी है।"

धीरे-धीरे दोनों लांचें किनारे पर लग गईं पहले वह उतरा।

"ट्रक तैयार है।"

ट्रक वहीं पर लगा हुआ था।

"क्या बात है? बॉस आजकल बहुत ज्यादा घबराया हुआ है।"

"हां, पुलिस सतर्क है। यह तो शुक्र है कि आज दंगा हो गया, वरना···।"

वे बातें करते रहे।

इतने में सारा माल ट्रक पर लाद दिया गया।

"ओ० के० !"

"ओ० के० !"

वह अभी मुड़ा ही था कि सर्चलाइटों की रोशनी ने उसे जहां-का-तहां खड़ा कर दिया।

"हैण्ड्सअप। कोई भी भागने की कोशिश न करे, चारों ओर पुलिस है।"

उसने एक बार चारों ओर निगाह घुमाकर देखी। चारों ओर पुलिस थी।

उसने अपना हाथ जेब की ओर बढ़ाया ही था कि इंस्पेक्टर सतीश के रिवॉल्वर की गोली सीधी उसके हाथ पर लगी थी।

सभी गिरफ्तार कर लिए गए।

पुलिस के हाथ काफी माल लगा। इंस्पेक्टर प्रभु को पुरस्कार दिया गया।

▭ ▭

▭ ▭

जॉन को सिगनल क्लीयर होने तक की रिपोर्ट मिल चुकी थी। वह खुश था कि एक बला तो टल गई। अब आगे से दूसरी योजना बनाएगा।

वह माल की प्रतीक्षा कर रहा था।

पांच बज गए।

अब उसके मन में खटका हुआ, कहीं नम्बर थर्टी-वन माल लेकर भाग न गया हो ? फिर उसने सोचा, नहीं, वह बहुत विश्वासी था।

उसने नम्बर वन को बुलाया।

"यस सर !"

"जाओ, जल्दी मालूम करो कि माल क्यों नहीं आया ?"

"यस सर !"

"जल्दी।"

"ओ० के० सर !"

नम्बर वन तट की ओर जाने वाले गुप्त रास्ते की ओर बढ़ गया।

जॉन सोच में डूब गया।

उसकी सोच जब टूटी, तब उसने देखा कि कंट्रोल-रूम का बल्ब स्पार्क करने लगा है।

उसने जल्दी से हैड फोन लगाया।

"हैलो ! ओवर।"

"नम्बर वन स्पीकिंग दिस साइड, ओवर।"

"क्या रिपोर्ट है ?"

"सर !" नम्बर वन का घिघियाता स्वर कांपा।

जॉन के दिमाग को झटका लगा।

"क्या है ?"

"सर ! माल पकड़ा गया।"

"क्या ?"

मानो एक साथ कई बमों का विस्फोट हुआ हो।

"कोई पकड़ा गया ?"

"जी सर ! सभी पकड़े गए।"

जॉन का दिमाग चकरा गया, क्योंकि यह माल की बहुत बड़ी खेप थी।

उसने हैडफोन रख दिया।

□ □

□ □

पुलिस सतर्क थी। सभी आदमियों को गिरफ्तार करने के बाद गुप्त रूप से दूसरी जगह भेज दिया गया।

विनोद नीरू होटल में प्राय: आता-जाता रहता था। अभी तक उसे कोई कामयाबी नहीं मिली।

वह सोच रहा था कि एक बार अड्डे तक कैसे पहुंचा जाए ?

□ □

□ □

मंदिर का पुजारी दिनों-दिन धनवान होता जा रहा था। किसी को आश्चर्य नहीं था। कारण कि आजकल वहां भक्तों की भीड़ बहुत रहती थी। जॉन के आदमी प्राय: आते रहते थे तथा कई किराये के भक्त भी थे। उसके अलावा जॉन के आदमियों ने मंदिर के बारे में बहुत चमत्कारी बातें फैला रखी थीं।

पंडिताइन भी इस परिवर्तन पर सोचती तो उसे लगता कि कहीं गड़बड़ है, परन्तु क्या गड़बड़ है, यह आज तक उसकी समझ में नहीं आया। फिर भी उसके मन में कहीं-न-कहीं खटका-सा रहता।

जनता का पंडित जी पर अगाध विश्वास था।

मंदिर के नीचे जो गुप्त तहखाना बना हुआ था, उसको केवल पंडितजी या जॉन के आदमी ही जानते थे।

पंडितजी के यहां से डुप्लीकेट कैसेट, पेम्फलेट शहर में फैलने लगे। इसके साथ ही पंडितजी काफी सतर्क हो गए। पूरा दिन राम-नाम में निकालते थे।

साथ ही साये ने उस पर छलांग लगा दी। नीरज फुर्ती से एक ओर हट गया। वह अपनी ही झोंक में गिर गया।

नीरज भी तैयार हो गया था। साया भी काफी फुर्तीला था। वह भी तैयार हो गया। उसने नीरज की तरफ छलांग लगाई। उसने उसका वार बचाकर अपनी टांगों का तिरछा वार किया। वह उसकी छाती में लगा।

एक चीख निकल गई।

नीरज ने अब उसे संभलने का मौका नहीं दिया। वह उस पर घूंसे बरसाने लगा।

एकाएक वह आदमी घूम गया। नीरज इसके लिए तैयार नहीं था।

साया बड़ा ही जीवट था। दोनों एक-दूसरे से गुत्थम-गुत्था हो गए।

दोनों लहूलुहान हो गए।

एकाएक लाइटों की वजह से दोनों की आंखें चुंधिया गईं।

इससे पहले कि वह कुछ समझ सके, उसने नीरज की नाक पर रूमाल रख दिया। अगले ही पल वह अचेत हो गया।

"दोनों को डाल लो।" किसी आदमी का आदेशात्मक स्वर गूंजा।

फिर वह कार पुराने खंडहर की ओर बढ़ गई। वहीं जाकर लुप्त हो गई।

▭ ▭

▭ ▭

जॉन को लगा, अगर यही स्थिति रही तो उसका मानसिक संतुलन कायम नहीं रह सकेगा।

□ □

□ □

नीरज रहमान का पीछा करता होटल नीरू पहुंच गया। उसने रहमान को काउंटर पर संदिग्ध अवस्था में देखा था। तब से वह दिन-भर उसका पीछा करता रहा।

वह जहां भी गया, नीरज उसके पीछे था। मस्जिद भी गया। वहां उसने क्या बातचीत की, वह समझ नहीं सका। फिर भी उसे उन बातों से यह अंदाजा लगा कि वह काफी डरा हुआ है।

होटल नीरू में बैठे हुए अभी उसे आधा घंटा हुआ होगा कि वहां की लाइट चली गई।

इसके साथ ही एक तेज चीख पूरे होटल में फैल गई। नीरज ने होटल के मेनगेट पर एक रिवॉल्वरधारी साए की झलक देखी। वह फुर्ती से दरवाजे की ओर भागा।

उसने तेज कदमों से भागने की आवाज सुनी। वह भी उसी आवाज के पीछे भागा।

शायद साया हड़बड़ा गया। वह और तेजी से भागने लगा।

"रुक जाओ, वरना गोली मार दूंगा।" नीरज ने उसे धमकी दी।

परन्तु उस पर कोई असर नहीं हुआ। वह भागता रहा। धीरे-धीरे उनका फासला कम होता चला गया और वह समय भी आया, जब नीरज ने उसे धर दबोचा।

इसके साथ ही साए ने एक घूंसा उसकी ओर घुमा दिया।

नीरज इसके लिए तैयार नहीं था। वह नीचे गिर पड़ा। उसकी आंखों के सामने तारे नाचने लगे। इसके

रहमान को उसने गोली मरवा दी। इसका कारण यह था कि वह उसके अड्डे को देख चुका था।

उसने ट्रांसमीटर पर 'टिप्-टिप्' की आवाज सुनी।

"यस !" उसने पिन निकालकर कहा।

"सर। दुश्मन का एक आदमी पकड़ा गया।"

"वैरी गुड। उसे नम्बर तीन प्लांट पर डाल दो।"

नम्बर तीन प्लांट में जमीन पर लोहे की प्लेटें लगी हुई थीं, जिन पर स्विच दबाते ही कांटे उभर आते थे।

जॉन के चेहरे पर प्रसन्नता के भाव थे।

▭ ▭

▭ ▭

मुकेश व इंस्पेक्टर सतीश कल से परेशान थे। नीरज का कुछ भी पता नहीं लगा था। आखिर वह कहां गया ?

होटल नीरू की मालकिन गुलनार थी। वह एक चतुर औरत थी। किसी को भी मूर्ख बनाना उसके बायें हाथ का खेल था।

जॉन के कमरे में जॉन तथा सेठ दारूवाला बैठे थे।

"आजकल हथियारों की बड़ी कमी हो गई है।" सेठ दारूवाला ने कहा।

"कोई चिन्ता की बात नहीं। कल या परसों तक एक नई खेप आने वाली है। वह आधी सेठजी के यहां और आधी गुलनार के यहां पहुंच जायेगी।"

"गुड !" सेठजी ने अपना पैग खाली कर दिया।

गुलनार अभी तक उनके बीच में नहीं आयी थी। वह जानती थी कि ये दोनों ही बिलासपुर में होने वाले दंगों के जिम्मेदार हैं। उसे खुद भी तो इन लोगों से बहुत पैसा मिलता था।

"अब हमें खुलकर सामने आना चाहिए। परसों ईद का त्यौहार है। परसों ऐसा दंगा हो कि सबकुछ अगला-पिछला हिसाब बराबर हो जाए।"

जॉन को एकाएक एक विचार आया। कूटनीति।

वह अपने साउंड-प्रूफ कमरे में चला गया।

उसने सेठ दारूवाला को यह समझाया कि यह हिन्दुस्तान उनका है। बरसों से इस पर आपका अधिकार है। हम यह चाहते हैं कि पूरे हिन्दुस्तान में सिर्फ हिन्दू ही रहें।

"हुं।" सेठ दारूवाला की आंखें सोचने वाले अंदाज में सिकुड़ गईं।

"आप जानते हैं कि मेरा यहां आने का एक उद्देश्य यह भी था कि जिनका सही हक है, उन्हें मिलना ही चाहिए।"

"आप ठीक कह रहे हैं।"

"हम गलत तो कभी कहते ही नहीं।"

"आपके पिताजी रायबहादुर सेठ पोपटवाला से हमारे क्या संबंध थे, यह आपसे छुपा हुआ नहीं है।"

"मेहनत-मजदूरी हिन्दू करता है और सारा माल मुसलमान ले जाते हैं।"

"क्या यह ठीक है?"

"नहीं। मैं सारे मुसलमानों के घरों को आग लगवा दूंगा।"

लोहा गर्म हो रहा था।

"और तो और, उस दिन तो इन्होंने हद कर दी। उस हिन्दू लड़की को गोलियों से मार दिया। मंदिर को आग लगवा दी। यह सब मुझसे सहन नहीं होता।" जॉन की

आवाज भर्रा गई।

"आपके ही भरोसे है।"

"हमको तो यहां नहीं रहना है। रहना तो आपको ही है। हमारी यह हार्दिक इच्छा है कि हकदार को उसका हक मिल जाए।"

"यह सब आपकी कृपा है।"

"कृपा की कोई बात नहीं है। जिस दिन हिन्दुओं को अपना हक मिल जाएगा, उस दिन हमारा मिशन खत्म हो जाएगा।"

"यह दिन बहुत जल्दी ही आएगा। अगर आप कहें तो ईद वाले दिन…।"

"नहीं-नहीं, यह मत करना। कारण, इस मोके पर पुलिस कुछ ज्यादा ही सतर्क होगी। अगर कहीं पर थोड़ी चूक हो गई…।"

"मैं तुमको दो-तीन दिन में सारा प्लान बता दूंगा। तब तक यह मालूम करो कि मुसलमानों की कितनी बस्तियां हैं।"

"ओ० के०।"

"जॉन साहब, आपका मैं हार्दिक रूप से आभारी हूं, जो आज आपने मेरी आंखें खोल दीं।"

"आभारी की क्या बात है? हम तो आपकी सेवा में आधी रात को हाजिर हैं।"

सेठ दारूवाला चला गया। जॉन के होंठों पर जहरीली मुस्कान थी।

"अब आएगा मजा।" वह बड़बड़ा उठा।

सेठ दारूवाला सोच रहा था कि जॉन ने कितनी सच बात कही है। सेठ के दिमाग ने सोचना बंद कर दिया।

अब तो केवल उसके दिमाग में मुसलमानों के लिए जहर भर गया था। उसने यह नहीं सोचा कि कल तक यह क्या कहता था, आज क्या कह रहा है। उसकी आंखें लाल हो रही थीं।

घरघराहट के साथ गाड़ी स्टार्ट की। गाड़ी सुरंग में हिचकोले खाती हुई आगे बढ़ने लगी। दो बार चैकिंग हुई। सेठ दारूवाला को प्रायः सभी जानते थे। कुछ ही देर में वह अपने फार्म के मेन दरवाजे पर था। उस समय वहां उसकी कार खड़ी थी। उसने एक स्विच को दबाया। दरवाजा बिना किसी आवाज के बंद हो गया।

उसने ऑफिस में बैठकर एक सिगरेट सुलगाई, फिर घंटी का बटन दबाया।

"यस सर !" चपरासी ने अदब से कहा।

"एक गर्म कॉफी।"

"यस सर !"

चपरासी चला गया। सेठ दारूवाला फिर विचारों में डूब गया।

"कॉफी सर !"

कॉफी पीने के बाद वह स्वयं को काफी हल्का महसूस करने लगा।

फिर उसने कार स्टार्ट की और शहर की ओर जाने वाली सड़क पर कार दौड़ाने लगा।

▭ ▭

▭ ▭

इंस्पेक्टर सतीश व मुकेश दोनों ही जीप में बैठे शहर का चक्कर लगा रहे थे। दोनों ही नीरज के बारे में चिंतित थे।

"अंकल, क्यों ना नीरज से ट्रांसमीटर पर संबंध स्थापित कर लें ?" मुकेश ने अपना विचार प्रकट किया।

"नहीं। यह गलती कभी भी मत करना। अगर वह दुश्मनों के चक्कर में हो तो दुश्मन काफी सावधान हो जाएगा। साथ ही नीरज मुसीबत में पड़ जाएगा।"

"ओह !" अब मुकेश को अपनी गलती का अहसास हुआ।

इंस्पेक्टर की रेडियमयुक्त घड़ी रात के दो बजा रही थी। वे अभी बिलासपुर के जंगल की ओर से आने वाली सड़क से कुछ ही दूरी पर थे कि उन्हें जंगल वाली सड़क पर किसी वाहन की रोशनी दिखाई दी।

"रात के इस वक्त में सड़क पर...।" मुकेश ने अपना वाक्य अधूरा छोड़ दिया।

इंस्पेक्टर ने अपनी जीप एक साइड में लगा दी।

कुछ ही क्षणों में हैडलाइट्स पास आती हुई दिखाई दीं। वह कार थी। वह शहर की ओर जाने वाली सड़क पर बढ़ गई।

इसके साथ ही इंस्पेक्टर ने पीछा करना शुरू कर दिया। गाड़ी जब डिफेंस कॉलोनी की ओर मुड़ी तो इंस्पेक्टर ने उस कार को पहचान लिया। यह तो सेठ दारूवाला की कार है।

कुछ ही देर में दारूवाला ने कार अपनी कोठी के आगे खड़ी कर दी। दारूवाला कार से उतरा।

'सेठ दारूवाला।' इंस्पेक्टर बुदबुदाए।

सेठजी कोठी में प्रवेश कर गये।

'सेठ दारूवाला इतनी रात गए जंगल वाली सड़क पर क्या कर रहा था ?'

यह तो इंस्पेक्टर को मालूम था कि वहां सेठ दारू-वाला का फार्म है, परन्तु इतनी रात गए वहां क्या करता होगा ?

"मुकेश कल से तुम सेठजी को चैक करना।"

"ओ० के०।"

इंस्पेक्टर नीरज व सेठ दारूवाला के बारे में सोच रहा था। जीप अब पुलिस स्टेशन की ओर भाग रही थी।

▭ ▭

▭ ▭

विनोद होटल नीरू में बैठा था। वह सोच रहा था कि कुछ ऐसा किया जाए, जिससे कुछ उठा-पटक हो, यह सोच उसने बैरा को आवाज लगाई—"अबे ओ चमगादड़ की औलाद ! क्या बहरे हो ?"

एक बेयरा, जोकि बेयरा कम गुण्डा ज्यादा नजर आ रहा था, वहां आया और घूरकर उसे देखने लगा।

"क्या उल्लू की तरह आंखें मटका-मटकाकर देख रहे हो ?"

जैसे आग में घी डाल दिया हो।

उस बेयरे ने विनोद का कॉलर पकड़ लिया—"अबे ओ मच्छर की औलाद ! तुमने विक्टर से बदतमीजी की है, इसका तुम्हें फल भुगतना पड़ेगा।" उसकी आंखें क्रोध से लाल हो रही थीं।

"उल्लू के चरखे ! तुम विक्टर हो या एक्टर—हमारी सेहत पर इसका कोई असर नहीं पड़ता।"

विनोद अपना वाक्य पूरा कर पाता कि विक्टर ने अपना दायां हाथ घुमा दिया।

विनोद इसके लिए तैयार था। उसने उसका वार बायें हाथ पर रोका तथा उससे भी ज्यादा फुर्ती से अपना दायां हाथ घुमा दिया।

विक्टर इसके लिए तैयार नहीं था। वह एक ही वार में उलट गया। उसके होंठों से खून निकल आया। इसके साथ ही उसका चेहरा क्रोध की वजह से तमतमा गया।

"मैं तुम्हें जिंदा नहीं छोड़ूंगा हरामजादो।" उसने विनोद पर जम्प लगा दी। विनोद हर स्थिति से निपटने के लिए तैयार था। उसने जूडो का एक दांव मारा। उसके मुंह से एक भयानक चीख निकल गई।

"हरामजादो! कहां मर गए? इनका कीमा बना दो।"

मानो सभी सोते से जाग पड़े। उन्होंने अपने-अपने चाकू खोल लिए। उनके चेहरों पर खतरनाक भाव थे।

"अब तुम यहां से जिंदा नहीं जा सकते।" वह दहाड़ा। वह शायद उनका बॉस था। बदमाशों ने घेरा बना लिया, फिर धीरे-धीरे विनोद की ओर बढ़ने लगे। विनोद ने सतर्कता से चारों ओर देखा, कुछ निर्णय लिया।

उसने बायां हाथ बढ़ाया। मेज पर कुछ सब्जी की प्लेटें रखी हुई थीं। वे कुछ समझ पाते, उसने उनमें से एक प्लेट उठा उस कथित बॉस के मुंह पर दे मारी।

'धड़ाक' की आवाज के साथ ही बॉस के चेहरे पर सब्जी फैल गई।

अचानक ही वे सारे चाकूधारी उस पर झपट पड़े। देखने वालों की सांस रुक गई। वे सोच रहे थे कि अब यह लड़का जीवित नहीं बचेगा। कुछ की चीखें निकल गईं।

परन्तु यह क्या? जब उन्होंने देखा, विनोद एक टेबल

पर खड़ा मुस्करा रहा है।

अगले ही पल वह बिजली की-सी फुर्ती से उन पर टूट पड़ा।

एक को उसने फिरकनी की तरह घुमाकर उसी के साथियों पर फेंका।

इतने में एक चाकू सनसनाता हुआ विनोद की ओर आया। विनोद ने फुर्ती से झुकाई दी। वह चाकू उसके पीछे खड़े उसी के साथी को लगा, जोकि विनोद का निशाना लेने वाला था।

एक हृदय-विदारक चीख से पूरा हॉल गूंज गया।

उसके बाद उन किराये के गुण्डों का हौसला जवाब दे गया। वे भाग खड़े हुए।

विनोद के चेहरे पर बिजयी मुस्कान थी। वह वहां पर श्याम और उसके साथी का इंतजार कर रहा था।

इतने में होटल में श्याम और उसके साथी ने प्रवेश किया। उनकी नजरें विनोद को खोज रही थीं।

"टेबल नम्बर पांच पर आ जाओ।" विनोद ने बिना पीछे मुड़े ही कहा। उसने वाश-बेसिन पर लगे शीशे में उनको देख लिया था।

"वाह गुरु, आज तो तुमने कमाल कर दिया। सच में तुम शेर हो। तुम्हारा उस्ताद धन्य है, जिसके तुम्हारे जैसे शागिर्द हैं।"

"लेकिन बात क्या है? मेरी तो कुछ समझ में नहीं आया।" उसने लापरवाही से कहा।

"उस्ताद! हमको मत बनाओ। आज तुमने जो विक्टर की धुनाई की, उससे हमारी तबीयत गार्डन-गार्डन—मेरा मतलब—खुश हो गई।"

"ओह। लेकिन उसकी धुनाई कहां हुई? वह तो बीच में मैदान छोड़कर भाग गया।"

"खैर। आज रात को तुम्हें बॉस ने बुलाया है।"

"मिल लेंगे।"

"तुम रात को यहीं दस बजे पहुंच जाना।"

"ओ० के०।"

"कुछ खा-पी लो।"

"नहीं।"

"यार, कुछ हाथ में खुजली हो रही है। कुछ काम-काज नहीं हो तो अच्छा नहीं लगता।"

"एक बार बॉस से मिल लिये तो सांस लेने की फुर्सत नहीं मिलेगी।"

"ठीक है।" उसने अपनी तरफ से बॉस से मिलने की कोई उत्सुकता प्रदर्शित नहीं की।

विनोद वहां से जैसे ही निकला, उसके पीछे दो आदमियों ने आंखों-ही-आंखों में कुछ इशारा किया।

विनोद ने अपनी मोटरसाइकिल स्टार्ट की और जान-बूझकर शहर के बाहर की ओर बढ़ा दी। कुछ ही दूरी पर चलने पर उसे मालूम हो गया कि उसका पीछा किया जा रहा है।

'इनको सबक देना चाहिए।' उसने अपनी मोटरसाइकिल जंगली घाटी की ओर बढ़ा दी। वह जानता था कि वे वहां आयेंगे।

उसने कुछ ही दूरी पर जाकर मोटरसाइकिल को एक पेड़ की ओट में खड़ा कर दिया। कुछ ही देर में उसे दो और मोटरसाइकिलें दिखाई दीं। वे भी वहां आकर रुक गई थीं।

"वह कहां गया? आगे तो रास्ता बंद है।"

"कहीं उसे यह मालूम न हो कि आगे गड्ढा है और वह गिर गया हो।"

अब तक दोनों ने मोटरसाइकिलें स्टैण्ड पर लगा दी थीं।

"हैलो!" तभी विनोद ने दोनों के पीछे से कहा।

दोनों चौंक गये।

"कहिये, आप मेरा पीछा क्यों कर रहे थे?"

"आपको गलतफहमी हुई है। हम तो अपना साथी खोज रहे थे।"

तभी विनोद ने तेजी से एक व्यक्ति के मुंह पर घूंसा दे मारा। वह दोहरा हो गया।

इतने में दूसरे ने फुर्ती से रिवॉल्वर निकाल लिया।

"हैण्ड्स अप!"

विनोद ने जहरीली मुस्कान के साथ कहा, "तो इस खिलौने से मुझको डराना चाहते हो?"

जैसे ही उसका ध्यान अपने साथी की ओर गया, वह वहीं मात खा गया। विनोद ने उस पर छलांग लगा दी। अगले ही पल विनोद उसकी छाती पर बैठा था। उसने उसके एक हाथ को पकड़कर झटका दिया।

उसकी चीख निकल गई।

"हमें माफ कर दो।"

"तुमको मेरे पीछे किसने लगाया था?"

"हमारे बॉस ने।"

"तुम्हारा बॉस कौन है?"

"जी, हमें नहीं मालूम। हमें तो जो काम करना होता है, होटल के बेयरे हमें बता देते हैं और पैसा भी वहीं मिल जाता है।"

विनोद समझ गया कि ये तो मात्र मोहरे हैं, जिनका कोई महत्त्व नहीं है।

"भाग जाओ। अगर मुड़कर पीछे देखा तो···।"

वे दोनों ऐसे भागे, मानो सैकड़ों भूत एकसाथ देख लिए हों।

▭ ▭

▭ ▭

नीरज को जब होश आया तो उसने अपने-आपको एक कोठरी में पाया। सीलनभरी कोठरी में केवल एक रोशनदान था, जिसमें से हवा छन-छनकर आ रही थी।

कोठरी में अंधेरा था।

पूरा बदन दर्द के मारे टूट रहा था। वह ट्रांसमीटर पर इंस्पेक्टर सतीश से संबंध मिलाने लगा। उसका संबंध मिल गया।

"हैलो अंकल! मैं नीरज बोल रहा हूं।"

"कहां से बोल रहे हो?"

"पता नहीं।"

फिर उसने सारी बातें अंकल को बता दीं। साथ में यह भी कह दिया, आप चिंता न करें, मैं सुरक्षित हूं।

फिर उसने मुकेश व केस के बारे में पूछा। उसके बाद संबंध-विच्छेद कर दिया।

▭ ▭

▭ ▭

चरमराहट के साथ दरवाजा खुला। एक ठंडी हवा का झोंका अंदर आया। नीरज ने जोर से सांस खींची।

टॉर्च का तेज प्रकाश कोठरी में फैल गया।

"अबे उठ!" एक कड़कदार आवाज गूंजी।

नीरज कुछ नहीं बोला।

उसने टॉर्च का रुख नीरज की ओर किया। वह एकदम बेहोश जैसा पड़ा था। उसने सहारा देकर उसको उठाया।

थोड़ी देर में वे एक संकरी गली में से गुजरने के बाद फिर एक मैदान में आ गए। उसमें चारों ओर प्रकाश फैला हुआ था।

आगंतुक नकाबपोश दाईं ओर घूम गया। अब वे एक हॉल में थे।

उसे एक कुर्सी पर बिठा दिया गया।

फिर उसने एक बटन दबाया।

स्वचालित हथकड़ियां नीरज को लग चुकी थीं। वह उनकी व्यवस्था पर चकित था।

कुछ ही देर में उसे जलतरंग-सी सुनाई दी। मंच धीरे-धीरे हिलने लगा। कुछ नकाबपोश जो बैठे थे, एकदम सतर्क होकर बैठ गए।

प्रकाश का झनाका हुआ। मंच पर एक नकाबपोश बैठा था। उसकी केवल आंखें दिखाई दे रही थीं। अंगारों जैसी दहकती आंखें।

उसने एक सरसरी नजर हॉल में बैठे सभी व्यक्तियों पर डाली।

"नम्बर थर्टी!"

"यस सर!" वह आदरपूर्वक स्वर में बोला।

"काम हो गया?"

"हां सर!"

"ठीक है।"

उसके बाद उसने सभी से अलग-अलग रिपोर्ट ली।

"तुम इसका पीछा क्यों कर रहे थे?"

"क्योंकि इसने एक आदमी का खून किया था।"

"तो क्या वह आदमी तुम्हारा रिश्तेदार था?"

"नहीं।"

"फिर।"

"यह एक नागरिक-कर्त्तव्य था।"

"ओह!" उसने व्यंग्यात्मक हंसी में कहा।

"तुम कौन हो?"

"वही एक मामूली-सा हेरा-फेरी करने वाला।"

"काफी तेज आदमी हो।"

"यह तो कोई पारखी आदमी मालूम कर सकता है।"

"काम करोगे?"

"जरूर। काम क्या होगा?"

"बता दिया जाएगा।" फिर एक व्यक्ति से सम्बोधित हुआ—"नम्बर सिक्स, इसे यहां के सारे नियम और फार्मूला दुनिया का नम्बर चार दिखा देना।"

सिक्स नम्बर उसे एक कमरे में ले गया।

"यदि तुमने कभी भी चालाकी दिखाने की कोशिश की या बॉस की आज्ञा का उल्लंघन किया तो इस दुनिया का कोई भी कोना तुम्हें छुपा न सकेगा।"

फिर वह उसे एक हॉलनुमा कमरे में ले गया। उसके बीच में एक बहुत ही मजबूत लोहे की सलाखों से बना पिंजरा था। उसमें एक वनमानुष था। उसके चारों ओर मानव-कंकाल पड़े थे।

"यह आदमखोर वनमानुष है। इसे आदमियों का खून बहुत अच्छा लगता है।"

वह समझ गया।

"अब देखो, मंदिर के पंडितजी ने बॉस का कहना मान

लिया, तो आज वह ऐश कर रहे हैं।"

फिर वह उसे एक कोठरी में ले गया। वहां एक आदमी बंधा हुआ था।

"यही हैं पंडित निरंजनप्रसाद जी।"

"भगवान् तुम्हें कभी माफ नहीं करेगा।"

"कहां है तेरा भगवान् ?"

"वह आएगा, जरूर आएगा।"

"हा-हा-हा !" वह हंसा—"आजकल वनमानुष बहुत चिल्ला रहा है। बेचारा भूखा है। देर सही, चीज अच्छी मिलेगी।"

नीरज कांप गया। वह यह तो समझ गया कि पंडितजी का कोई भाई है, जो अवैध काम करता है। पंडितजी उसके पक्ष में थे नहीं, इसलिए उन्होंने पंडितजी को कैद कर लिया।

▭ ▭

▭ ▭

जॉन ने अकबर को बुलाया। अकबर माना हुआ गुण्डा था। उसका अपना संगठन था। चाहे कोई भी काम हो, जिसमें वह हो या न हो, उसे खबर जरूर रहती थी।

"हैलो अकबर ! हाऊ आर यू ?"

"ठीक हूं।" उसकी आवाज में जॉन के लिए आदर था।

"कहो, क्या चल रहा है ?"

"ठीक चल रहा है।"

"वैसे एक बात है, पिछली बार जो दंगा हुआ, उसमें इन हरामी हिन्दुओं ने मुसलमानों...।" जॉन ने जानबूझकर अपना वाक्य अधूरा छोड़ दिया।

अकबर का चेहरा लाल भभूका हो उठा।

□ □

□ □

रात्रि के दस बजे विनोद होटल नीरू में पहुंच गया।

वहां पर वे दोनों पहले ही तैयार थे। आते ही उठ पड़े।

वे दोनों और विनोद एक वैन में बैठ गए। उस वैन के शीशे काले थे। उनमें से कुछ भी दिखाई नहीं देता था। उसके बैठते ही वैन तेजी से चल पड़ी। कुछ देर चलने के बाद वैन मोड़ काटकर एक ओर मुड़ गई। इधर विनोद वैन में बैठा, उधर इंस्पेक्टर सतीश को आई० जी० साहब का फोन मिला।

अब इंस्पेक्टर अपने विशेष कक्ष में था। वह सामने लगे डैश-बोर्ड में रीडिंग पढ़ रहा था। वैन काफी तेज चल रही थी। कुछ समय बाद ही वैन रुक गई। इंस्पेक्टर सतीश ने बहुत ही सक्षमता से रीडिंग नोट की।

"उतरो!"

विनोद उतर गया।

वहां एकदम अंधेरा था।

विनोद उतर गया। फिर उसे पेंसिल टॉर्च की सहायता से एक कमरे में ले जाया गया।

वहां उसकी तलाशी ली गई। कुछ नहीं मिला। फिर उसे कपड़े बदलने को कहा।

वह जरा असमंजस में पड़ गया।

"जल्दी बदलो।"

उसे एक काली ड्रैस दी गई। उसने सोचा, वह यंत्र जो उसकी पैंट की तह में था, निकाल ले, परन्तु टॉर्च की रोशनी सीधी उस पर पड़ रही थी। वह नहीं चाहता था कि उनको कोई संदेह हो।

"नहीं ! मुसलमानों ने काफी हिन्दुओं को मारा।"

"यह अच्छी बात है।"

अकबर को प्रसन्नता हुई, जॉन उसको बढ़ावा दे रहा था।

"हमारी तो यही इच्छा है कि एक दिन हिन्दुस्तान की बागडोर तुम्हारे हाथों में हो। इसके लिए हम तन-मन-धन से तुम्हारे साथ हैं। बिलासपुर में एक भी हिन्दुस्तानी नहीं बचना चाहिए।"

"अगर आप हमारे साथ हैं तो समझ लो, बिलासपुर में जल्दी ही आप और केवल हम होंगे।"

"यही होना चाहिए।"

"इसके लिए तुम्हें जो भी जरूरत हो, हमसे बोलना। हम तुमको देगा।"

"ठीक है सर !"

"यह लो दस हजार रुपये।"

"यह काम कब करना है ?"

"इसका प्रोग्राम हम तुम्हें दे देंगे। उसके बाद···?"

जॉन ने अकबर को काफी उत्तेजित कर दिया था। वह चला गया।

▭ ▭

▭ ▭

जॉन ने अपनी कूटनीति द्वारा वहां के तीन-चार ग्रुप के गुण्डों को और भड़का दिया।

फिर उसने अपना प्रोग्राम देखा। नौ दिन बाद माल आने वाला है। वह यह जानता था, अगर यह माल उसके हाथ में नहीं पहुंचा तो उसका मिशन समाप्त हो जाएगा। उसने अपना प्रोग्राम फाइनल कर लिया।

उसने जल्दी से कपड़े बदल लिए।

फिर वे एक दूसरी कार में बैठ गए। कार के शीशे भी काले थे। कार जंगल की ओर बढ़ चली। कार को कभी-कभी हल्का धक्का-सा लगता था।

▭ ▭

▭ ▭

मुकेश लगातार सेठ दारूवाला की कोठी की निगरानी कर रहा था।

रात्रि के साढ़े दस बजे उसने एक वैन को कोठी की तरफ आते देखा। वह सतर्क हो गया।

उसका हाथ अपने रिवॉल्वर की ओर बढ़ गया। पांच मिनट पश्चात् ही उसने एक कार को सेठ की कोठी के पीछे वाले हिस्से में से निकलते देखा। उसने अपनी मोटरसाइकिल स्टार्ट की। उसकी मोटरसाइकिल साइलेंसर युक्त थी।

कार जंगल वाली सड़क पर बढ़ रही थी। मुकेश भी बराबर दूरी बनाए रखे उनका पीछा कर रहा था। इसका आभास उन्हें नहीं हुआ।

कार जंगल में से गुजरती सेठ दारूवाला के फार्म के आगे जाकर रुक गई।

मुकेश ने अपनी मोटरसकिल फार्म से कुछ ही दूरी पर रोक दी।

उसने सतीश अंकल को सारी रिपोर्ट दी। अंकल समझ गए, आई० जी० साहब ने रीडिंग के लिए कहा था, वह जरूर कोई गुप्तचर विभाग का या खास आदमी होगा।

रीडिंग का अध्ययन करने से वह सेठजी की कोठी पर जाकर रुक गई।

इसका मतलब है, सेठ दारूवाला भी ब्लैक-लिस्ट में

आ गया।

उसके बाद मुकेश की रिपोर्ट। सब मिलकर सेठ की स्थिति संदेहास्पद हो गई थी।

चूंकि कोई प्रमाण नहीं था, इसलिए वह कुछ नहीं कर सकते थे। सेठ दारूवाला का बहुत ही मजबूत सर्किल था। कल को उलटा बांस बरेली को लाद दिया जाए।

इंस्पेक्टर सतीश ने आई० जी० साहब को सारी बात बताई। वे योजना बनाने लगे।

▭ ▭

▭ ▭

जॉन अपने विशेष कक्ष में बैठा था। उसने ट्रांसमीटर पर सेठ दारूवाला से सम्पर्क बनाया। कोई आवाज नहीं आ रही थी। मतलब, सेठ वहां नहीं था।

हरा बल्ब स्पार्क करने लगा।

"यस !"

"सेठ दारूवाला, शेरा आ गया है।"

"ठीक है, ले आओ।"

वह अपने ड्राइंगरूम में आ गया। इस समय वह नकाब में था। उसने आवाज बदलकर सेठ को कहा, "सेठजी, सारी तैयारी हो गई। बस, अब दिन निश्चित करना बाकी है। हमको जॉन ने सारी बात बता दी है।"

"सेठ, यह लड़का शेरा है। वास्तव में शेर है। जो काम तुम्हारे और हमारे आदमी न कर सके, वो इसने किया। वैसे एक पुलिसवाले का ख़ून करके भागा है। हो सकता है तुम्हारे मिशन में सफलता में साथ दे।"

"ओ० के० बॉस !"

"अब आराम करो। आधे घंटे बाद फिर बात होगी।"

उसने अपना प्लान बताया। साथ ही में परसों शाम को सबको यहां आने का निमंत्रण दिया।

जब वह यह सब बता रहा था तो ट्रांसमीटर पर से आवाज आई—"नम्बर जीरो सर! एक अच्छी खबर। जो लड़का आपने पकड़ा है सर, वह पुलिस का जासूस है।"

"क्या?"

"हां सर!" एकदम पक्की खबर।

"श्यामसिंह!" अचानक खुशी से उसके मुंह से नाम निकल गया। फिर उसे भूल का अहसास हुआ।

"तुम्हें इनाम दिया जाएगा।"

"सेठजी, पुलिस का जासूस पकड़ा गया। अब अपना प्रोग्राम एकदम फाइनल।"

विनोद के कान खड़े हो गए। कहीं वह नीरज तो नहीं। फिर उसने सोचा, वही होगा।

▭ ▭

▭ ▭

नीरज को एक कमरा दे दिया गया। उस पर पूरी नजर रखी जा रही थी। जान ने कह दिया था कि उस पर कड़ी नजर रखी जाए। उसका विचार था, जब तक उसे यह मालूम न होगा, वह शांति से बैठेगा।

नीरज पंडित निरंजनप्रसाद को छुड़ाने का पक्का निश्चय कर चुका था।

पहरेदारों को यह बात मालूम नहीं थी कि यह पुलिस का आदमी है।

उसने पहरेदारों से बातचीत करनी शुरू की। पहरेदारों से बोला, "तुम लोग बहुत ही सुखी व ऐशो-आराम से हो।" वह उनको उकसाता रहा।

अन्त में एक पहरेदार ने कहा—"भाई हम कितने सुखी

उन दोनों को एक कमरे में बिठा दिया गया। उस कमरे में सभी सुविधाएं उपलब्ध थीं। सेठ विनोद के बारे में पूछने लगा। वह बताता गया। बातों-बातों में सेठजी ने अपने मिशन के बारे में भी बता दिया। विनोद उस बारे में सोचने लगा।

▭ ▭

▭ ▭

मुकेश सेठ के फार्म पर पहुंच गया। चौकीदार राउंड लेने गया था। उसने ऑफिस का दरवाजा खोलना चाहा, परन्तु दरवाजा लॉक था। उसने 'मास्टर की' निकाली। दरवाजा खुल गया।

अन्दर कोई नहीं था। वे लोग कहां गायब हो गए। उसने बहुत खोज की, परन्तु वह कुछ भी मालूम कर न सका। जब वह घूमा तो उसका पैर मेज के कोने से टकरा गया।

एक हल्की-सी आवाज के साथ ही अलमारी घूम गई। सामने सीढ़ियां थीं।

उसने ट्रांसमीटर ऑन कर अंकल को सूचना दी। फिर वह सीढ़ियां उतर गया।

सुरंग में से होता हुआ वह मेन दरवाजे तक पहुंच गया। उसने जेब में से एक सिक्का निकाला और दूसरी साइड में उछाल दिया।

पहरेदार उसी तरफ गया। वह अन्दर पहुंच गया। अब जल्दी से उसने अपने छुपने की जगह खोजनी थी। वह उसे मिल गई। एक कमरे में पलंग के नीचे छुप गया।

▭ ▭

▭ ▭

जॉन ने कुछ ही समय बाद सेठ व शेरा को बुलाया।

हैं, यह हम जानते हैं। हम जी नहीं रहे। हमें हमारी मजबूरियां जबरदस्ती जीने को मजबूर कर रही हैं।"

उसने उससे सारी बातों की टोह ले ली, फिर उसने उसके साथ अपना प्रोग्राम सैट कर लिया।

▭ ▭

▭ ▭

मुकेश का पलंग के नीचे पड़े-पड़े दिल घुटने लगा। इतने में एक लड़का अन्दर आया। वह कमरे की सफाई कर रहा था। मुकेश के दिमाग में तुरन्त एक योजना आई। उसने धीरेसे निकलकर लड़के का मुंह पीछे से दबोच लिया। लड़का हड़बड़ा गया। अगले ही पल उसने आत्मसमर्पण कर दिया।

मुकेश कुछ बोले, उससे पहले उसने मुकेश को चुप रहने का इशारा किया, फिर उसने दीवार में लगे गुप्त माइक्रोफोन को निकाला। उसके तार अलग कर दिए।

"तुम्हारा नाम?"

"राम।"

"यहां क्या करते हो?"

"सफाई।" उसके बाद उसने सारी बात बतला दी। वह भी वहां मजबूरी में काम कर रहा था। वह मुकेश के साथ मिल गया।

▭ ▭

▭ ▭

सेठ दारूवाला और शेरा एकसाथ कार में आए। इंस्पेक्टर सतीश फार्म की निगरानी कर रहे थे। उन्होंने इंस्पेक्टर राना को ट्रांसमीटर पर सूचना दे दी। इंस्पेक्टर राना सेठ की कोठी के आसपास अपने साथियों सहित फैल गए।

शेरा भी उनके साथ था। कोठी में पहुंचकर सेठजी ने उन सभी के पते दे दिए, जिनको उसने निमंत्रण देना था। सभीको अलग-अलग नम्बर दिए गए थे। उनमें अकबर, सेठ पीपलवाला, मंदिर का पुजारी, मौलानाजी, दो-चार गुण्डों के नेता, सभी को अलग-अलग रास्तों से वहां पहुंचने को कहा।

शेरा सभी को संदेशा दे आया। उसके बाद सीधा आई० जी० साहब के घर पहुंच गया। इंस्पेक्टर सतीश भी वहीं थे। उन्होंने विनोद को देखते ही पहचान लिया था।

"तुम यहां ?"

"यस अंकल !"

"कब से ?"

"बहुत दिनों से।"

उसके बाद उसने सारी बात बता दी। साथ में श्याम-सिंह का नाम भी।

श्यामसिंह को गुप्त रूप से गिरफ्तार कर लिया गया।

फिर यही निश्चय किया गया कि सभी को रंगे हाथों गिरफ्तार किया जाए।

▭ ▭

▭ ▭

अड्डे पर सभी व्यक्ति पहुंच चुके थे। जॉन सभी से अलग-अलग मिला था। सभी की आवाजें जॉन के कमरे में टेप हो रही थीं।

राम ने यह बात मुकेश को बता दी थी। दोनों उस समय जॉन के गुप्त कमरे में थे।

उसमें तीन दिन बाद का दिन निश्चय किया गया। सभी को बस बीस-बीस हजार रुपये दिए गए। उसके बाद सभी को एक-एक नकाब दी गई।

सभी हॉल में इकट्ठे हो गए।

उधर मुकेश ने टेप की हुई कैसेट अपने कब्जे में ले ली।

नीरज ने पहरेदार से मिलकर पंडितजी को आजाद करवा दिया। फिर वहां जितने भी पहरेदार थे, सभी को बेहोश कर दिया।

▭ ▭

▭ ▭

इंस्पेक्टर सतीश, सुमन आंटी जो कि 'आंटी' के नाम से जानी जाती थी, वास्तव में एक पुलिस इंस्पेक्टर थी। राना तथा आई० जी० साहब सभी ने मोर्चे ले लिए थे।

जैसे ही सब लोग हॉल में इकट्ठे होने लगे, विनोद ने घड़ी का बटन दबा दिया—सिगनल था पुलिस फोर्स के लिए। अगले ही पल पुलिस फोर्स हरकत में आ गई।

इधर सभी हॉल में इकट्ठे हो रहे थे, उधर पुलिस अपना घेरा मजबूत बना रही थी।

नीरज और पंडितजी ने जॉन के कमरे की ओर का मोर्चा लिया।

जलतरंग-सी बजी। एक झनाके के साथ जॉन मंच पर दिखाई दिया।

"उपस्थित सज्जनों, हिन्दुस्तान तुम्हारा है। तुम्हें यह मिलना चाहिए। कोई दूसरा यहां हुकूमत करे, क्या यह अच्छा है?"

"नहीं।" सभी ने एक साथ सरगोशी की।

इससे आगे कि वह कुछ बोले, एक गोली सनसनाती आई और कांच का वह केबिन, जिसमें जान बैठा था, टूट गया।

"कौन बदतमीज है?"

आगे बोलने की ज़रूरत ही नहीं पड़ी। सारा हॉल पुलिस से घिर चुका था।

जॉन का चेहरा पीला पड़ गया। इसकी तो उसने कल्पना भी नहीं की थी।

"हैण्ड्स अप ! सभी घिर चुके हैं।"

सभी ने हाथ ऊपर कर लिए।

कोई कुछ समझ पाता, जॉन ने पैर से एक स्विच दबा दिया। सभी को एक झटका लगा। फर्श नीचे समा गया।

अब वे सभी कांच के कैदखाने में कैद थे। जॉन ने अट्टहास लगाया।

सभी पुलिसमैनों के हाथों में अभी भी बन्दूक व रिवॉल्वर थे।

इतने में मुकेश व राम ने जॉन पर हमला किया। पहला वार वह खा गया।

इससे पहले कि वह संभलता, मुकेश ने पिस्तौल की नाल उसकी कमर में सटा दी, जिसकी चुभन उसे महसूस हो रही थी।

"इन्हें कैद से निकालो, वरना···।"

"वरना···।"

मुकेश बोलता, उसके पहले ही इंस्पेक्टर राना बोले, "तुम्हारे सभी साथी मौत के घाट उतार दिए जाएंगे।"

"हा-हा-हा !" वह हंसा।

"ये मेरे साथी···! मेरा कोई भी नहीं है। अगर ये खत्म हो जाते हैं तो मेरा कुछ नहीं बिगड़ेगा। ये सब तो किराये के हैं।"

सभी नकाबपोशों का खून खौल गया।

इसी असावधानी का जॉन ने पूरा लाभ उठाया। उसने मुकेश व राम को कवर कर लिया।

"अब किसी ने हिलने की भी कोशिश की तो मैं इन्हें

गोली मार दूंगा।"

इंस्पेक्टर राना सोच रहे थे कि हैण्ड बम से कांच की दीवार उड़ा दी जाए।

परन्तु बाजी उलट गई।

जॉन एक जहरीली हंसी हंसा—"अब तुम सबकी कब्र यहां बनेगी...।"

इतने में नीरज ने स्थिति को देखते ही गोली चलाई। गोली सीधी जॉन के हाथ पर लगी। रिवॉल्वर दूर गिरा।

दूसरी गोली चलाई। वह जॉन का कंधा छीलती हुई चली गई।

इतने में उस पहरेदार ने स्विच दबा दिया। सभी ऊपर आ गए।

नीरज ने तीसरी गोली चलाई स्विच-बोर्ड पर। सारा सिस्टम खत्म हो गया।

सभी को गिरफ्तार कर लिया गया। उस अड्डे में से काफी अवैध सामान भी बरामद हुआ। उसमें सुरजीतसिंह भी कैदी के रूप में मिला। उसे कैद इसलिए किया गया था कि वह उनके रहस्य जान गया था तथा पुलिस को खबर देना चाहता था।

उसको खत्म इसलिए नहीं किया गया कि वे जानना चाहते थे कि उसने यह राज और किसको बताया।

सेठ दारूवाला, पीपलवाला, अकबर, पुजारीजी, मौलानाजी, सभी ने अपना-अपना दोष मान लिया—मंदिर-मस्जिद से हथियार व तहखाने से अन्य विदेशी सामान बरामद हुआ।

पंडित निरंजनप्रसाद के भाई की पत्नी ने जब अपने पति की करतूत सुनी तो आगबगूला हो उठी। साक्षात्

चण्डी बन गई। उसने बन्दूक उठा ली और अपने पति को मारने पर उतारू हो गई। बड़ी मुश्किल से लोगों ने उन्हें काबू में किया।

सारी जनता गद्दारों को देखने के लिए उमड़ पड़ी। सभी के चेहरों के नकाब हटा दिए गए।

जैसे ही उन्होंने देखा, जनता ने उन पर जूतों, पत्थरों की वर्षा शुरू कर दी। सभी को सही बात ध्यान में आ गई।

दूसरे ही दिन एक जुलूस निकाला गया, जिसमें विनोद, मुकेश, नीरज, इंस्पेक्टर सतीश, राना, सुमन आंटी व पहरेदार जो पुलिस के गवाह बन चुके थे। उनमें श्यामसिंह भी था।

चारों ओर उल्लास।

हिन्दू-मुस्लिम-सिख-ईसाई—आपस में सब हैं भाई।

हम सब एक हैं।

विनोद ने जॉन को कहा—"मजबूरियों पर टिका यह मिशन जल्दी ही खत्म हो गया। यह हिन्दुस्तान है। वे मजबूर थे ! जिस दिन वे पॉवर में आए, सबसे पहले तुम्हें ही…।"

वह चिरपरिचित मुस्कान के साथ अपने केन्द्रीय संस्था के हैडक्वार्टर की ओर बढ़ गया।

पक्षी भी इस सफलता पर चहचहा रहे थे।

बचपन की यादें
क्या आप हिंदी कॉमिक्स खरीदना या बेचना चाहते है.
हिंदी कॉमिक्स में "मनोज कॉमिक्स","राज कॉमिक्स"
"तुलसी कॉमिक्स" ,"इंद्रजाल कॉमिक्स",वा ऐसे-ऐसे
कॉमिक्स जिनके आप ने नाम भी नहीं सुने होंगे.
जो हमारे बचपन की धरोहर है और यदि आप
इन्हें बचाने में मदद करना चाहते है तो आगे
आये और कॉमिक्स ख़रीदे,और जो लोग इन
कॉमिक्स को सम्भाल नहीं पा रहे है वो
इन्हें उन काल्लेक्टार्स को बेचे और
अपने बचपन को बाचने में हमारी मदद करने
के लिए संपर्क करें
मनोज पाण्डेय -9919750880

मनोज चित्र कथा

प्यारे बच्चो !

मनोज चित्र कथा के
नये सैट की पुस्तकें शीघ्र पढ़ें

चाचा परोपकारीलाल और मुसीबतों का जाल
चाचा परोपकारी लाल का हुआ बुरा हाल
अकड़ जी-झगड़ जी चक्कर पे चक्कर
इंस्पेक्टर मनोज और कातिल हवा
परोपकारी मैंना और मृत्युफल
क्रुक बाण्ड और मि० मौत
बेबी और लाभप्रद केले
आत्मा का प्रतिशोध
लकड़ी की गुड़िया
मेहनत की कमाई
सर्पलोक की देवी
राजा और रंक
अग्नि महल
तीन भाई
महाठग
देवपुत्र



मनोज पाकेट बुक्स
दरीबा कलां, दिल्ली-६

हम सब एक हैं मनोज ३-००